पुरस्कृत बाल-हास्य एकांकी

●

को तो ये किशोरोपयोगी हास्य एकांकी हैं, किन्तु नवसाक्षरों तथा
ी पाठकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं। नए पाठकों के
ज्ञान को भापते हुए इस संग्रह की भाषा शैली और कथा-प्रवाह को
ी सरस व रोचक बनाया गया है। आशा है, पाठक हमारे प्रयास की
ा करेंगे।

●

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण
यही है हमारा उद्देश्य।

पुरस्कृत बाल-हास्य एकांकी

संपादक

श्रीकृष्ण

एकांकी-क्रम

तोतली भाषा का सूबा

❖

'सत्य' जैसवाल

❖

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

❖

पहला दृश्य

पर्दा उठता है। एक सजे हुए कमरे का दृश्य।
भक्त ध्रुव, वीर अभिमन्यु, शहीद हकीकत राय
टंगे हुए हैं। कुछ छोटे-छोटे बच्चे—अशोक, अजी
पप्पू, सप्पू आदि बैठकर अपनी तोतली भाषा में
सभी प्रसन्न नजर आ रहे हैं। तभी बाहर एक
(हॉकर) बहुत-से दैनिक पत्र उठाए आवाज लग

हॉकर : आज का ताजा समाचार....सरकार ने
स्वीकार कर ली....पंजाबी सूबा बनना
फतहसिंह अपनी सफलता पर प्रसन्न. प
खबरें !

अशोक : हें हें....क्या पंजाबी सूबा बनना निश्चित

सभी एक-दूसरे की तरफ देखते हैं और आश्चर्य

अशोक : (बाहर आकर) ए पेपर वाले ! एक पेप

हॉकर : (उतावली में) हां-हां, लीजिए, राजा बाबू

या. ..आखिर पंजाबी भाषा वालों ने अपनी मांग मंजूर करा
ो..

त्र अशोक को देता है और अशोक से पैसे लेकर अपनी जेब हुआ 'आज का ताजा समाचार' चिल्लाता हुआ आगे बढ़ अशोक कमरे में आता है।

आश्चर्य से) अले अछोक भैया, क्या खबल है ?

त्जीत समाचार-पत्र पढ़कर आप सभी को सुनाएगा।

समाचार-पत्र लेकर पढ़ता है) नई दिल्ली, आज कांग्रेस की ार्यकारिणी समिति ने भाषा के आधार पर पंजाब का विभाजन वीकार कर लिया है। पंजाबी सूबे के अतिरिक्त भाषाई ाधार पर हरियाणा राज्य भी बनने की सम्भावना है। इसमे ़सी का अहित नहीं होगा, बल्कि पंजाबी और हिन्दीभाषी ोगो को समान रूप से आदर मिलेगा।

ाल, मेली छमज में तो कुछ नईं आता, यह 'भाचाई-भाचाई' ा होता है ?

अखिलेश : अले बोलचाल, औल क्या ! पंजाब में कुछ लोग हिन्दी बोलते हैं और कुछ पंजाबी, इछीलिए पंजाबी बोलने वालों ते लिए पंजाबी छूबा अलग बनाया जाएगा।

सप्पू : औल हम तौन छी भाचा बोलते हैं ?

पप्पू : तोतली भाचा।

सप्पू : तो फिल हमें भी अपनी तोतली भाचा ता अलग छूबा बनाने ती मांग तरनी चाहिए।

अशोक : **(आश्चर्य से)** तोतली भाषा का सूबा....!

सभी हंस पड़ते हैं।

सप्पू : तो इछमें हंचने ती तौन छी बात है ? जब छब लोग अपनी-अपनी भाचाओं ता छूबा बना रए एं, तो त्या हमें अपनी तोतली भाचा ता छूबा नईं बनाना चाइए ?

अरविंद : बनाना चाइए, औल जलूल बनाना चाहिए।

पप्पू : तोतली भाचा ता छूबा अवछ्य बनेगा।

अजीत : हम अपनी तोलली भाषा का सूबा लेकर ही रहेंगे !

सप्पू : तोतली भाचा....?

सब : जिंदाबाद !

सप्पू : तोतली भाचा बोलने वाले....?

सब : अमर रहें !

सप्पू : तोतली भाचा ता छूबा लेना हमाला....?

सब : जन्मसिद्ध अधिकार है....!

गगनभेदी नारों से पूरा कमरा गूंज उठता है।

अशोक : प्यारे तोतले भाइयो, तो हमारा यह अटल निश्चय है कि अब हम अपना तोतली भाषा का सूबा लेकर ही रहेंगे। हम देश के सभी तोतलों को एक सूत्र में पिरोएंगे और दुनिया को दिखा देंगे कि तोतले भाइयों का सूबा कितनी शान-शौकत वाला है।

सप्पू : तो हमाले देछ में तोतलों की छंख्या तितनी है ?

अरविंद : यह त्या बड़ा छवाल ऐ ? भालत ती जनछंख्या पैंतालीछ तलोल है, औल उछ पैंतलीछ तलोल में छे दछ तलोल छंख्या छोते बच्चों ती ऐ जो ति छबी तोतले ओते ऐ तो त्या हम

दछ तलोल तोतले बच्चे बी अपना तोतली भाछा ता छूबा लेने ते अधिताली नई ऐं ?

अजीत : क्यों नहीं हैं, जबकि पंजाब के हमसे बहुत थोड़े पंजाबीभाषी अपना भाषाई 'पंजाबी सूबा' बना रहे हैं, फिर क्या हम दस करोड़ तोतले-भाषाई भी अपना सूबा नहीं बना सकते ?

अशोक : फिर क्या है, हम लोगों को अपनी कार्यवाही शुरू कर देनी चाहिए।

सप्पू : इछते लिए हमें त्या तलना चाइए ?

पप्पू : अनछन तलने होंगे, मम्मी छे लूठना होगा, पापा तो ताम ते नाम पल नैन मतकाने होंगे, औल छबी तोतलों तो एत छूत्र में पिलोना होगा।

अरविंद : औल त्या तलना होगा ?

पप्पू : औल दैदी तो यह चेतावनी देनी होगी कि हमाला जेब-खलच चाल दुना कल दें।

सप्पू : मम्मी की पिताई हम नई छएंगे।

अजीत : पढ़ाई का समय एक घंटे और खेलने का समय चार घंटे कराना होगा।

अशोक : फिर आप लोग पूरी तरह तैयार हैं ?

सब : तैयार हैं....तैयार हैं....!

अशोक : तो हमें अपनी मांग मनवाने के लिए एक तोतले को अनशन के लिए बिठाना है। बताओ, कौन अनशन करेगा ?

सब चुप होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं।

अशोक : **(अरविंद को बुलाकर)** अरविद, क्या तुम अनशन के लिए तैयार हो ?

अरविंद : **(सकपकाते हुए खड़े होकर)** भैया, जब मुझे लोटी खाने तो थोली देल हो जाती ऐ, तो मेले पेत में बहुत जोल छे दलद होने लगता ऐ !

अशोक : तो तुम नहीं कर सकते ?

अरविंद (   ) न न नई

अशोक **अजीत से** अजीत तुम तैयार हो ?

अजीत : **(घबराकर)** मुझे तो अनशन का नाम सुनते ही बड़ी जोर से भूख लग आयी है, फिर अनशन क्या कर पाऊंगा !

अशोक : तो तुम भी तैयार नहीं हो ?

अजीत : मैं कुछ कम तोतला हूं इसलिए उचित भी नहीं रहूंगा, भैया.... हां....

अशोक : अच्छा, तुम रहने दो। **(पप्पू से)** पप्पू, बोलो, क्या तुम अनशन कर सकते हो ?

पप्पू : **(खुशी से)** अनशन तो तल दूंगा, पलंतु मुझे आप छभी को छुपा-छुपातल ताफी, आइछक्लीम, तेत औल बिछकुट थिलाने पलेंगे !

अशोक : यह सब कुछ भी नहीं मिलेगा।

पप्पू : तो मेला अनछन भी नईं चलेगा।

अशोक : **(अखिलेश को पुकारकर)** अखिलेश, तुम बहुत अच्छे आदमी हो, मुझे तुम पर पूरी उम्मीद है कि तुम अनशन करके सरकार को हिला दोगे और तोतलों के लिए सूबा मंजूर करा लोगे।

अखिलेश : हां, भैया, मैं तैयाल हूं, मैं अनछन कलूंगा, मैं लोती नईं थाऊंदा, पानी नईं पीऊंदा औल तब तक नईं पीऊंदा जब तक कि हमें छूबा नईं मिल जाता।

अशोक : **(खुश होकर)** शाबाश ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

अखिलेश : मैं अतल हूं, भैया, लेतिन....

अशोक : लेकिन क्या ? बताओ, हमें तुम्हारी सभी शर्तें मान्य होंगी।

अखिलेश : यई कि मुझे लोती ते बदले लछदुल्ला औल पानी ते बदले छलबत पिलाना होदा !

अशोक : नहीं, कुछ नहीं, अनशनकर्ता को पानी के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा।

अखिलेश : जब भूत लगेगी तब ?

अशोक : भूखा ही रहना होगा।

अखिलेश : तो पइले आप तलेंदे, पप्पू तलेदा, छप्पू तलेदा, और छब तलेंदे, तब मैं तल दूंगा !

अशोक अच्छा सप्पू, तुम्हारा क्या विचार है

(डरकर) भैया, मैं अनछन तल दूंगा तो मेली मम्मी मुझे बहुत मालेगी, जब मुझे लोती को थोली देल ओ जाती ऐ, तो वह मुझे बहुत दांतती है।
(खीझकर) तो तुम भी नहीं कर पाओगे ?
ऐछा तो मैं तल दूंगा कि घल में नईं छल छे बाअल।
तुमसे भी नहीं होगा, सप्पू, कोई और ही तलाश करना होगा।
आप ई तल दीजिएगा ना....!
अरे भाई, जब मैं ही कर देता, तो आप लोगों को काहे को पूछता। दिन में छह बार खाता हूं, यदि एक बार न मिले, तो दिन में ही तारे नजर आने लगते हैं !
आं....आं, याद आया, भैया।
क्या याद आया ?
त्यों न अनछन अमाली गुद्दी से तलाया जावे, वह तीन मईने ती ऐ, लोटी तो त्या पानी बी नई पीती ऐ।
पर दूध तो पीती है।
पानी ती जगह पल दूद मांगा जाए।
(खुशी से) ठीक है, ठीक है।
तो घोषणा करा दी जाय कि तोतली भाषा के सूबे की मांग के लिए गुड्डी देवी ने आज से अपना आमरण अनशन शुरू कर दिया है।

ले जाते हैं। अकेला अजीत गले में ढोल डालकर उसे पीटता नादी करता फिर रहा है।

केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार तथा नगरवासियों को यह जानकर दुःख होगा और छोटे बच्चों को यह जानकर खुशी होगी कि हम सभी बच्चों ने अपना जन्मसिद्ध अधिकार 'तोतली भाषा का सूबा' प्राप्त करने के लिएँ आन्दोलन छेड दिया है, क्योंकि तोतली भाषा ही हमारी मातृभाषा है। हमारे दल की एक सदस्या गुड्डी देवी ने अपना आमरण अनशन शुरू कर दिया है। जब तक हमें यह सूबा नहीं मिलेगा तब तक गुड्डी देवी का अनशन समाप्त नहीं होगा यह सूचना हमने

दिल्ली प्रधानमंत्री के पास भी भेज दी है। **ढोल पीटता है—डम् डम् डम्....**

दूसरा दृश्य

अशोक कमरे के अन्दर चिन्तित अवस्था में चहलकदमी कर रहा है तभी अजीत भीतर आता है, उसके चेहरे पर उदासी छायी है।

अशोक : कहो, अजीत, क्या समाचार है ?

अजीत : अभी कुछ ठीक नहीं है, भैया।

अशोक : गुड्डी देवी के अनशन का आज कौन-सा दिन है ?

अजीत : उन्हें अनशन करते हुए आज सात दिन हो चुके हैं, पूरे सात दिन।

अशोक : सरकारी डॉक्टरों की बुलेटिन का क्या कहना है ?

अजीत : यही कि अब तक गुड्डी देवी ने इतना अधिक दूध पिया है कि सात दिनों में उनका पांच पौंड वजन बढ़ गया है !

अशोक : **(आश्चर्य से)** पांच पौंड ! लेकिन अनशनकर्ता का वजन तो घटना चाहिए।

अजीत : यह बूढ़े खुर्राटों का अनशन नहीं जिसकी झूठी बुलेटिन हो। यह हमारी तीन माह की गुड्डी देवी हैं। अन्न तो क्या पानी भी नहीं पीतीं, परन्तु पानी के स्थान पर दूध-ही-दूध पीती हैं।

अशोक : यदि सात दिनों में पांच पौंड वजन अधिक हुआ, तब तो एक माह में ही गुड्डी देवी का वजन बीस पौंड से भी अधिक हो जाएगा !

अजीत : अजी, सच्चा अनशन है ना !

तभी पप्पू, सप्पू, अखिलेश, अरविंद जय-जयकार करते हुए आते हैं। सभी बहुत प्रसन्न नजर आ रहे हैं।

सब : तोतली भाछा....जिंदाबाद ! अमाला छूबा....अमल लहे ! गुड्डी देवी की जय ओ ! तोतले बच्चों की जय ओ !

अशोक : **(आश्चर्य से)** अरे भाई, यह कैसी खुशी मनाई जा रही है ?

सप्पू **(खुशी से)** भैया तमाल ओ गया अमाली माग मजूल तल ली दई

त : **(खुशी से उछलकर)** क्या हुआ, बताओ तो ?

लेश : तल प्लधान मंतिली जी अमाले शअल में आ लही ऐं। उन्होंने अमाली मांग छ्वीताल तल ली ऐ। अब हमें तोतली भाछा ता छूबा मिल जाएगा।

त : **(बहुत जोर से उछलकर)** जियो, प्यारे, मार दिया पापड़ वाले को !

सभी डटकर उछलते-कूदते हैं। जोर-शोर की नारेबाजी होती है।

तीसरा दृश्य

चारों ओर चहल-पहल है। झंडियां लगी हैं। प्रधानमंत्री के आगमन की तैयारियां हो रही हैं। एक तरफ एक बोर्ड पर लिखा है, 'हमारी प्रधानमंत्री—अमर रहें'। एक छोटी कुर्सी और मेज लगी हुई है जिस पर फूलदान रखे हैं। कुछ कुर्सियां मेज के चारों ओर रखी हुई हैं जिन पर अजीत, अखिलेश, पप्पू, सप्पू आदि बैठे हुए हैं। तभी एक लड़की प्रधानमंत्री की वेशभूषा में आती है। अशोक द्वारा प्रधानमंत्री के गले में फूलों का हार पहनाया जाता है। पास ही अरविंद तीन माह की गुड्डी को, जिसने 'आमरण अनशन' किया है, गोद में लिये बैठा है। तभी प्रधानमंत्री खड़ी होकर अपना भाषण देती हैं।

नमत्री : देश के प्यारे तोतले भाइयो ! आज आप लोगों को मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष होता है कि आपकी तोतली भाषा के सूबे की मांग हमें पूर्णतः स्वीकार है। मैं आपसे बहुत प्रभावित हुई हूं। परंतु मैं आप लोगों से कुछ प्रश्न करना चाहूंगी। बोलो, क्या आप सभी लोग तैयार हैं ?

: तैयार हैं, तैयार हैं।

नमत्री : आप लोगों की भाषा कौन-सी है ?

क : तोतली भाषा ही हमारी भाषा और मातृभाषा है।

नमत्री : अच्छा-अच्छा, लेकिन एक शर्त आपको माननी होगी।

: त्या है वह छरत ?

नमत्री : यही कि आप लोगों को जीवन भर अपनी तोतली भाषा बोलनी होगी

सप्पू : जब बले होंगे तब भी ?

प्रधानमंत्री : हां, तब भी। और आपकी अनशन करने वाली गुड्डी देवी को अभी मेरे ही सामने अनशन तोड़कर पूड़ी, कचौड़ी, मालपुआ, रबड़ी, रसगुल्ला आदि खाने होंगे। बोलो, क्या आप लोगों को मेरी शर्त मजूंर है ?

सभी एक-दूसरे की तरफ देखते हैं। तभी एक स्त्री मंच पर आती है।

स्त्री : **(अरविंद की गोद से गुड्डी को छीनकर)** नहीं-नहीं, मैं कुछ भी नहीं खाने दूंगी अपनी दुधमुंही बच्ची को। क्या इसे मारने को लाए हो मुझसे ?

जोरदार ठहाका लगता है। धीरे-धीरे पर्दा गिरता है।

टोली-प्रवेश

❖

मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

❖

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

❖

नई दिल्ली की एक बस्ती में सुनसान गली का एक भाग। मौसम। रात के लगभग साढ़े सात बजे का समय। आस अंधेरा। खंभे के नीचे बिजली की रोशनी में गिरीश गेंद से खेल रहा है। एक बार खेल रोककर वह अंगुलियां जी दबाकर सीटी बजाता है। उत्तर में दूर से एक सीटी सुनाई कुछ देर बाद हरिकृष्ण भागता-भागता अंधेरे में से रोशन करता है।

गिरीश : (खेल रोककर) अरे, तुम तो ऐसे टपक पड़े, जैसे क छिपे बैठे थे !

हरिकृष्ण : मैं जब घर से निकला, तो तुम्हारी सीटी सुनाई पचीस मील की स्पीड से चला आ रहा हूं।

गिरीश : अच्छा, अपने पैसे ले आए तुम ?

हरिकृष्ण : (रूमाल में लगी गांठ दिखाकर) हां-हां, लेकिन इ क्या है ?

गिरीश : हां, तुम तो कल आए नहीं थे न; लेकिन तुम्हें आ कुछ नहीं बताया ?

उसने तो दूर से आवाज देकर इतना ही कहा कि शाम जरूर आना और पैसे ले आना।

वह रमेश का कुत्ता था न....

राजा ? क्या हुआ उसे ?

कल बेचारा मर गया।

अरे, परसों तो वह हमारे साथ ग्राउंड में खेल रहा था।

लेकिन कल अचानक बीमार हो गया और दो-तीन घंटे मे मर गया।

बेचारा कितना अच्छा था ! मुझे तो वह दूर से ही पहच लेता था।

वह तो हम सबको पहचानता था। लेकिन हम पांच-छह दो के सिवाय और किसी को खुद को छूने भी नहीं देता था

रमेश को तो बहुत दुःख हुआ होगा ?

दुःख तो हम सबको ही है। राजा सिर्फ रमेश का ही न हमारा भी साथी था। इसीलिए तो हमने रमेश के लिए

नया कुत्ता खरीदने की स्कीम बनाई है।

हरिकृष्ण : अच्छा ! यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन लाएंगे कहां से नया कुत्ता ?

गिरीश : चार नंबर कोठी का माली है न, उसके घर में कुतिया ने चार बच्चे दिए हैं। तीन तो बिक गए, चौथा हमने अपने लिए रखवा लिया। बहुत सुंदर पिल्ला है। बड़ा होकर राजा जैसा ही लगेगा....

अचानक पटाखा छूटने की आवाज होती है। दोनों चौंककर इधर-उधर देखते हैं। एक अजनबी लड़का हाथ में बंदूक लिये प्रवेश करता है।

गिरीश : ए लड़के ! क्या कर रहे हो यहां पर ?

लड़का : कुछ नहीं, यों ही जरा टहल रहा हूं।

हरिकृष्ण : यह हाथ में क्या है ?

लड़का : बंदूक।

हरिकृष्ण : दिखाओ तो....

लड़का : नहीं दिखाता।

गिरीश : अरे, बड़ी हेकड़ी दिखाता है ! क्या नाम है तेरा ?

लड़का : कैलाश ! क्यों, क्या इरादा है ?

गिरीश : इरादा ?....बंदूक देते हो या लगाऊं करारा झापड़ ?

कैलाश : नहीं देता, मेरी चीज है, मेरी मर्जी।

हरिकृष्ण : तो यहां से भाग जाओ।

कैलाश : क्यों ? क्या सड़क तुम्हारी है ?

गिरीश : हां, हमारी है। हमारी यहां मीटिंग होने वाली है।

कैलाश : मैं नहीं जाता, कर लो, क्या करते हो ?

गिरीश और हरिकृष्ण एक-दूसरे को देखते हैं।

गिरीश : **(हरिकृष्ण से)** सुपनुधीपनीर कोपनी आपनाने दोपनो। उपनुसके ऐपकेन भुपनुक्के सेपने ठीपनीक होपनो जावनाएपनेगा।

हरिकृष्ण : भीपनीम सेपनेन कापना मुपनुक्का।

कैलाश यह अजीब भाषा सुनकर हैरानी से उनकी ओर देखता है।

गिरीश : सुपनुधीपनीर कोपनोसीपनीटो दोपनो।

हरिकृष्ण सीटी बजाता है जवाब में एक सीटी की आवाज आती है

हरिकृष्ण : ए लड़के, भाग जाओ यहां से, नहीं तो हमारी टोली का भीमसेन तुम्हारा कचूमर निकाल देगा।

कैलाश : अच्छा, मैं तुम्हें अपनी बंदूक दिखा दूं, तो क्या तुम मुझे अपनी यह बोली सिखा दोगे ?

हरिकृष्ण : यह तो हमारी टोली की बोली है। जो टोली में होगा, हम उसी को सिखाते हैं।

कैलाश : तो मुझे अपनी टोली में शामिल कर लो।

गिरीश : तुम कहां रहते हो ?

कैलाश : सामने वाले मकान में। हम परसों ही भोपाल से आए हैं।

गिरीश : विपिन हमारी टोली का सरदार है। वह आएगा, तो हम उससे कहेंगे।

कैलाश : **(बंदूक आगे बढ़ाकर)** लो, देख लो इसे। यहां गोली डालो, फिर यह घोड़ा दबाओ और....

बंदूक की आवाज होती है। गिरीश और हरिकृष्ण बारी-बारी से बंदूक चलाकर देखते हैं। इतने में ही वहां दो लड़के और आते हैं। सुधीर भारी-भरकम शरीर का लड़का है और मोहन उससे ठीक उल्टा दुबले-पतले शरीर का।

सुधीर : हरिकृष्ण, तुम पर दो आने जुर्माना किया जाता है।

हरिकृष्ण : क्यों ?

सुधीर : कल क्यों नहीं आए थे ?

हरिकृष्ण : हमारे चाचाजी आ गए थे....

सुधीर : बस-बस, चाचाजी आएं या मामाजी; जुर्माना देना ही पड़ेगा। क्यों, मोहन, ठीक है न ?

मोहन : बिलकुल ठीक, सोलहों आने ठीक।

हरिकृष्ण : तुम कौन होते हो जुर्माना करने वाले ? विपिन कहेगा, तो दे देंगे।

सुधीर : विपिन तुम्हारी तरफदारी करता है, लेकिन हम इस बार नहीं मानेंगे। हमें भी तो जुर्माना देना पड़ता है। क्यों, मोहन, ठीक है न ?

मोहन बिलकुल सोलहो आने ठीक लेकिन विपिन के घर आज

मेहमान आए हुए हैं। वह शायद आज नहीं आएगा।

गिरीश : नहीं-नहीं, विपिन जरूर आएगा। लो, मैं आवाज लगाता हूं।

गिरीश दो अंगुलियां जीभ के नीचे दबाकर जोर की सीटी बजाता है। दूर से उत्तर में एक सीटी की आवाज आती है।

गिरीश : लो, वह आ रहा है।

कैलाश आश्चर्य से गिरीश की ओर देखता है और फिर दो अंगुलियां जीभ के नीचे रखकर सीटी बजाने की कोशिश करता है, किन्तु सीटी नहीं बजती। दूसरे लड़के हंस पड़ते हैं और वह शर्मिन्दा हो जाता है।

सुधीर : यह लड़का कौन है ?

गिरीश : सामने के मकान में रहता है। ये लोग कल ही आए हैं।

सुधीर : यहां क्या करने आया है ?

हरिकृष्ण : यह हमारा दोस्त है।

मोहन : एक ही दिन में तुम्हारा दोस्त बन गया ?

सुधीर : लेकिन हम अपनी टोली में किसी को शामिल नहीं करेंगे। क्यों, मोहन, ठीक है न ?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है।

हरिकृष्ण : तुम कौन होते हो फैसला करने वाले ?

मोहन : देखो, भई, बात-बात पर झगड़ा करना ठीक नहीं। विपिन को आ जाने दो।

सुधीर : हर बात का फैसला विपिन ही करेगा, तो हम कुछ नहीं हैं ? क्यों, मोहन ?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है ?

विपिन आता है।

विपिन : क्या बात है, सुधीर ? क्यों गर्मी दिखा रहे हो ?

सुधीर : देखो, विपिन, यह लड़का दल में नहीं है। इसे बाहर निकालो।

मोहन की ओर देखता है।

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है....

विपिन : कौन है यह ?

हरिकृष्ण : मेरा दोस्त है कैलाशकुमार। इसके पास एक बंदूक भी है। बहुत अच्छा निशाना लगाता है

विपिन : अच्छा ! **(कैलाश से)** दिखाओ तो जरा अपनी बंदूक।

कैलाश प्रसन्न होकर बंदूक देता है।

विपिन : बंदूक तो बहुत अच्छी है। कैसे चलाते हैं इसे ?

कैलाश बंदूक अपने हाथ में लेकर हवा में फायर करता है। आवाज से सुधीर चौंक पड़ता है।

गिरीश : यह सुधीर सबको हेकड़ी दिखाता फिरता है। दिल तो इसका कबूतर जैसा है। जरा-सी आवाज से डर गया।

सुधीर : कौन डर गया ? हम तो बड़ी-बड़ी बंदूकों से भी नहीं डरते। क्यों, मोहन ?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक....हम तो तोपों से भी नहीं डरते।

हरिकृष्ण : हमारे दल में एक बंदूक वाला भी होना चाहिए।

कैलाश : मेरे पास फुटबाल भी है। हम सब लड़के फुटबाल खेला करेंगे।

विपिन : ठीक है, लेकिन तुम अभी तक हमारी टोली के सदस्य नहीं हो, इसलिए तुम यहां नहीं ठहर सकते।

सुधीर : हां-हां, बिलकुल ठीक है।

कैलाश चुपचाप बंदूक लेकर कुछ दूर हट जाता है और फिर लड़कों की ओर पीठ करके खड़ा हो जाता है।

विपिन : मोहन, तुम रमेश के घर गए थे ?

मोहन : हां, आज गया था।

विपिन : कैसा है वह अब ?

मोहन : अब तो कुछ चलने-फिरने लगा है। लेकिन उसे राजा की बहुत याद आती है।

सुधीर : राजा बहुत प्यारा कुत्ता था। मुझे भी उसकी बहुत याद आती है।

गिरीश : हम सबको उसकी याद आती है। क्यों, हरि ?

हरिकृष्ण : हां-हां, वह हम सबका कुत्ता था।

विपिन : और यह नया कुत्ता भी हम सबका होगा। हम सब उसे प्यार कर सकेंगे।

सुधीर : प्यार तो बाद में करेंगे पहले कुत्ता ले तो आओ।

विपिन कल कुत्ता आ जाएगा अढ़ाई रुपये की तो बात है अच्छा

लाओ, अपने-अपने पैसे जमा करो।

विपिन रूमाल बिछाता है। सब लड़के अपनी जेबें खाल करके पैसे रूमाल पर डालते हैं। कैलाश बड़े ध्यान से उन्हें देखता है। विपिन पैसे गिनता है।

विपिन : **(पैसे गिनकर)** दो रुपये और दस पैसे।

मोहन : यानी चालीस पैसे कम रह गए।

गिरीश : अगर हम कल जेब-खर्च भी जमा कर दे, तो चालीस पैसे की कमी आसानी से पूरी हो जाए।

विपिन : लेकिन कुत्ता तो आज ही लाना है। माली ने आज का वायदा किया है। सुबह उस कुत्ते को बेच देगा।

मोहन : हां-हां, सोलहों आने ठीक। मैं कल उसके घर गया था। उसने सब कुत्ते दे दिए हैं। सिर्फ हमारा कुत्ता बचा है। कहता था कुछ ग्राहक इस कुत्ते के पांच रुपये देने को तैयार हैं।

विपिन : सौदा तो हमारे साथ हो चुका है।

सुधीर : लेकिन सौदा तो आज तक का है।

हरिकृष्ण : अच्छा, तुम लोग ठहरो, मैं अभी ले आता हूं चालीस पैसे।

विपिन : कहां से ?

हरिकृष्ण : मां से मांगूंगा।

विपिन : मां पूछेगी किसलिए चाहिए, तो ?

हरिकृष्ण : मैं कहूंगा, हमारे दोस्त का कुत्ता मर गया है, हम सब उसके लिए एक नया कुत्ता खरीदना चाहते हैं।

विपिन : अगर मां ने पैसे नहीं दिए, तो ?

हरिकृष्ण : मैं सच-सच सारी बात बता दूंगा, तो मां जरूर दे देगी।

विपिन : अच्छा, जाओ।

वह जाने लगता है। इतने में कैलाश आगे बढ़कर उसे रोकता है।

कैलाश : ठहरो, हरि !

हरिकृष्ण रुक जाता है।

कैलाश : मेरे पास आठ आने हैं।

विपिन : लेकिन तुम तो हमारी टोली के नहीं हो ?

कैलाश : तो क्या हुआ ? यह लो आठ आने

सुधीर : नहीं-नहीं, हमें तुम्हारे पैसे नहीं चाहिए। भाग जाओ यहां से !

कैलाश : क्यों ? क्या सड़क तुम्हारी है ?

मोहन : सोलहों आने ठीक बात पूछी, वाह !

सुधीर : **(पहले मोहन की ओर देखता है, फिर कैलाश से)** भागता है या लगाऊं दो झापड़ ?

कैलाश : **(गुस्से से)** ए पैटन टैंक, जबान संभालकर बोल !

'पैटन टैंक' का सम्बोधन सुनकर सब लड़के हंस पड़ते हैं। सुधीर को गुस्सा आता है और वह कैलाश की कमीज पकड़ लेता है। दोनों गुत्थम-गुत्था हो जाते हैं। सुधीर कैलाश की कमीज फाड़ देता है और कैलाश लंगड़ी मारकर सुधीर को नीचे पटक देता है। विपिन बीच में पड़कर दोनों को छुड़ाता है। इतने में कैलाश के पिता वहां आते हैं।

पिता : कैलाश ! यह क्या हो रहा है ?

कैलाश चुप रहता है। और सब लड़के भी चुप हैं।

पिता : यहां क्या कर रहे हो ? अरे, यह तुम्हारी कमीज किसने फाड़ी ?

कैलाश अपनी कमीज की ओर देखता है और चुप रहता है।

पिता : लड़ाई-झगड़ा हो रहा था ? क्यों, चुप क्यों हो ?

कैलाश : नहीं, पिताजी, हम लोग खेल रहे थे....

पिता : कपड़े फाड़ने का खेल खेल रहे थे ? कौन हैं ये लड़के ?

कैलाश : ये मेरे दोस्त हैं, पिताजी !

पिता : अच्छा....कल ही तो तुम यहां आए हो, आज तुमने इतने सारे दोस्त भी बना लिये !

कैलाश : जी....ये सब बहुत अच्छे लड़के हैं।

पिता : अच्छा, अब घर चलो।

कैलाश : अभी दो मिनट में आता हूं, पिताजी।

कैलाश के पिता चले जाते हैं। विपिन कैलाश के कंधे पर हाथ रखता है।

विपिन : शाबाश ! तुम बहुत अच्छे लड़के हो। तुम सच-सच कह देते तो हमें झाड पड जाती।

गिरीश अरे यार मै तो तुम्हें छोटा-सा लडका समझ रहा था तुमने

तो हमारे दल के भीमसेन को पटक दिया !

हरिकृष्ण : भीमसेन नहीं, पैटन टैंक को !

सब लड़के हंस पड़ते हैं।

मोहन : नाम तो बहुत ठीक रखा है।

सुधीर : **(खिसियाकर)** हां-हां, मेरी खूब मजाक उड़ाओ लेकिन अपने तजुर्बे से एक बात कहता हूं कि अगर हम कैलाश को अपने दल में शामिल कर लें, तो एक बहुत बड़ा फायदा होगा।

विपिन : वह क्या ?

सुधीर : हम अखाड़े में इससे पटेबाजी सीखेंगे।

हरिकृष्ण : एक और फायदा यह भी होगा कि यह हमें बंदूक चलाना भी सिखाएगा।

विपिन : लेकिन सबसे अच्छी बात तो यह है कि कैलाश के पास फुटबाल है। हम अपनी फुटबाल की टीम बनाएंगे।

गिरीश : तो फिर आज से कैलाश हमारी टोली का सदस्य हुआ।

कैलाश : क्या मैं अब आठ आने दे सकता हूं ?

विपिन : हां, लाओ। **(पैसे मोहन को देते हुए)** ये लो, मोहन, अभी जाकर माली से कुत्ता ले लो। कल इतवार है। सुबह नौ बजे हम यहीं पर मिलेंगे। जब लंबी सीटी बजे, तो कुत्ते को लेकर यहां पर आ जाना। फिर सब मिलकर रमेश के घर चलेंगे और उसे खुश कर देंगे।

गिरीश : किसी ने उसे बताया तो नहीं कि हम उसके लिए कुत्ता खरीदने वाले हैं ?

मोहन : अरे नहीं, उसे बिलकुल पता नहीं है।

गिरीश : तब तो मजा आ जाएगा।

विपिन : **(जाते-जाते)** याद रखना, कल सुबह नौ बजे ठीक....

मोहन : ठीक, सोलहों आने....

सब लड़के इधर-उधर हो जाते हैं। पर्दा गिरता है।

❁

गुड़िया का ब्याह

❖

रमेश कुमार माहेश्वरी

❖

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

❖

मंच पर बिलकुल सामने बायीं ओर एक पर्दा पड़ा हुआ है
एक दरवाजा होगा, ऐसा आभास होता है। दायीं ओर
गैलरी का मुखद्वार दिखाई देता है, जिसमें कोई पर्दा
कमरा बिलकुल साधारण है, अधिक सज्जा नहीं। फर्श
बिछी हुई है, जिस पर चादर पड़ी है। चादर बिलकुल
कमरे के बीचोंबीच पड़ी हुई है। कमरे में एक-दो मेज-कु
पर साफ-सुथरी गद्दियां पड़ी हैं। दीवार पर एक कैलेण्ड
कमरे का पूरा वातावरण ऐसा लगता है, मानो किसी अ
पहले से ही साफ करके रखा हुआ है।

जीजी फर्श पर, चादर पर बैठी हुई कुछ बुन रही है।
लाल रंग का ऊन का गोला पड़ा है, जिससे वह अपनी
है। मुन्नी और गुड्डी धीरे-धीरे बातें करती हुई एक कपड़े
झाड़ रही हैं।

जीजी : (बिना सिर उठाए ही) अरी, कब तक साफ कि
क्या दीवार की कलई उतारकर ही दम लोगी

: जीजी, तुम अपने गुड्डे का पुलोवर बुने जाओ, तुम्हें क्या ?
तो अपनी समधिन के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।

: **(हंसकर)** कब आएंगी जाने हमारी समधिन !

: **(गैलरी की ओर देखकर)** आती ही होंगी। समय तो हो
है। किसी काम में देर लग गई होगी।

: **(मुसकराकर)** जीजी के लिए मिठाई का थाल ला रहे हो

जी हंसकर चुप रह जाती है।

: अरे मुन्नी, तूने गुड्डे को धूप में तो रख दिया था न ?

: हां-हां, जीजी, मैं तो उसी समय रख आयी थी, जब आपने
करके दिया था।

: जीजी, सूखकर तो बड़ा अच्छा लगेगा हमारा गुड्डा। **(स**
गैलरी की ओर देखकर) लो, जीजी, वे लोग तो आ गए

र लोग दरवाजे की ओर लपकते हैं। मंजू और टुइयां सबको
ड़कर नमस्ते करते हैं। टुइयां जीजी से मिलाने के लिए हाथ
ाता है। जीजी मंजू का हाथ पकड़ लेती है और जोर से हिल
। टुइयां बोर हो जाता है और खिसियाकर कमरे में इधर-

चक्कर लगाने लगता है। जीजी सबको ले जाकर फर्श पर बिछी चादर पर बैठाती है।

मंजू : अरे टुइयां, यहां आ जा न !

टुइयां : तुम अपना काम करो। मैं जरा कैलेण्डर देख रहा हूं।

गुड्डी : **(हंसकर)** कल सोमवार है, मास्टरजी का काम नहीं किया होगा, इसलिए शायद देख रहा हो कि छुट्टी हो जाए तो अच्छा हो।

मुन्नी : गुड्डी, तू पागल है। उसे तारीख देखना आता हो तो देखे भी, वह तो तस्वीर देख रहा है।

सब खिलखिलाकर हंस पड़ते हैं।

टुइयां : **(गर्म होकर आता है)** हंहंहंहं....**(मुंह खिझाता है)** सबको अपने जैसा समझती है। तुझसे ज्यादा काम करके ले जाता हूं।

मंजू : **(टुइयां का हाथ पकड़कर, खींचकर उसे बैठाती हुई)** टुइयां, तुझे कब तमीज आएगी !

जीजी : जब टुइयां से टुआं हो जाएगा !

सब लोग फिर खिलखिलाकर हंस पड़ते हैं। टुइयां खिसिया जाता है।

मंजू : हां तो, जीजी, आपने काम की बात तो अभी तक बताई ही नहीं। आप कितने बाराती लाएंगी ?

जीजी : यही तो मैं भी बड़ी देर से सोच रही हूं। आदर्श ब्याह करूं, तो गुड्डे के दोस्त सब बुरा मानेंगे। अधिक बाराती ले आऊं, तो तुम्हें परेशानी होगी।

गुड्डी : कैसे भी हो, जीजी, कम-से-कम दस बाराती तो हो ही जाएंगे।

मंजू : जीजी, हमारे घर में तो अभी एक ही टी-सेट है। दो हम लोग भी हैं, कुछ घराती भी तो होंगे।

मुन्नी : तो क्या बात है, गर्मियों का मौसम है, कुछ लोगों को शरबत पिला देना।

गुड्डी : भाई, मैं तो चाय ही पिऊंगी और उसमें भी चीनी तेज।

मुन्नी अरी जा चीनी की चट्टा मै तो मजू जीजी बस एक चम्मच चीनी लगी

मुन्नी : और, जीजी, केक तो हबीब के यहां से बनना चाहिए। हमारे गुड्डे से सख्त केक तो काटा भी नहीं जाएगा।

जीजी : हां, तुमने बड़ी अच्छी याद दिलाई। केक तो मुलायम ही बनना चाहिए।

मुन्नी : और जीजी, गर्मियों में बिना आइसक्रीम के तो मजा ही नही आता।

गुड्डी : भाई, हमें तो मखानों की बर्फ में दबी खीर सबसे अच्छी लगती है।

मंजू : आज ही मम्मी ने आम डालकर कस्टर्ड बनाई थी, सब हाथ चाटते रह गए।

मुन्नी : ओ हो ! कस्टर्ड का क्या है ? हमारे यहां तो कोई खाता भी नहीं। रोज बनती है।

गुड्डी : जीजी, खीर ही बनवाओ।

मुन्नी : नहीं, जीजी, मैं तो अन्ननास की दो कप आइसक्रीम खाऊंगी।

टुइयां : हां-हां, छः कप खाएगी तू तो ! हमारे यहां तो कारखाना खुला हुआ है !

मंजू : **(टुइयां के सिर पर हल्की-सी चपत लगाकर)** टुइयां, तू इतना ज्यादा क्यों बोलता है ? याद नहीं, रात ही मम्मी ने पिताजी से कहा था कि बेटी वालों को झुककर चलना चाहिए ?

टुइयां : तो मैं तो बेटा हूं !

सब लोग हंस पड़ते हैं।

मंजू : मुन्नी, इसकी बात का बुरा मत मानना। यह तो बेवकूफ है।

टुइयां : हां-हां, मैं तो बेवकूफ हूं। तू बड़ी होशियार की बच्ची है ! रोज घर पर डांट पड़ती है। तब कैसा मजा आता है ?

गुड्डी : मंजू, पलंग निवाड़ का बनवाया है या बान का ?

मंजू : पलंग का तो मैंने ख्याल ही नहीं किया था।

गुड्डी : **(भभककर)** वाह जी वाह ! गुड्डा क्या हमारा जमीन पर सोया करेगा ? पलंग बिना तो विदा ही नहीं हो सकती।

मंजू नहीं पलंग तो जैसा आप कहेंगी वैसा बन जाएगा

जीजी हां भाई पलंग तो होना ही चाहिए गुड़िया-गुड्डे को आखिर

सुलाएंगे कहां ?

मुन्नी : और, जीजी, हमारे गुड्डे को बान के पलंग पर तो नींद ही नहीं आएगी। रोज झोल पड़ जाता है। निवाड़ का पलंग होना चाहिए।

मंजू : मैं पापा से कह दूंगी, कल ही बढ़ई से एक निवाड़ का पलंग बनवा देंगे।

गुड्डी : और, जीजी, बिस्तरे के लिए तो तुमने कुछ कहा ही नहीं ?

जीजी : हां, मंजू, बिस्तरा जाड़ों का होना चाहिए। कहीं गर्मियों के बिस्तरे में ही टाल दो।

मुन्नी : जीजी, मच्छरदानी और बांस क्या हम विलायत से मंगाएंगे ?

गुड्डी : अरे हां, मैं तो यह भूल ही गई थी !

टुइयां : और खटमल मारने के लिए एक डंडा भी तो चाहिए।

मंजू : टुइयां के बच्चे, तू ज्यादा मत बोला कर !

जीजी : मंजू, घी अच्छा लगवाना।

मंजू : जीजी, घी तो हमारे यहां अपनी ही भैंस का लगता है।

जीजी : हां, रद्दी घी से हमारे गुड्डे का गला बड़ी जल्दी खराब हो जाता है।

मुन्नी : जीजी, फोटो जरूर खिंचने चाहिए।

टुइयां : फोटो हमारे बड़े भैया खींच देंगे।

जीजी : ना जी, हमारे यहां तो सब यही कहते हैं कि शादी-ब्याह के फोटो भट्टाजी से अच्छे और कोई नहीं खींचता। पापा की शादी के भी उन्होंने ही खींचे थे। हम तो उन्हीं से खिंचवाएंगे।

मंजू : जीजी, बाहर के आदमी को बुलाने में बड़ा खर्च होता है। हमारी गुल्लक में तो जितने पैसे हैं, उन्हीं में काम करना है।

गुड्डी : इसका यह मतलब थोड़े ही है कि हमारा गुड्डा ऐसे ही बारात लेकर चला जाएगा।

गुड्डी : जीजी, एक बात तो बताओ, गुड्डा आएगा किस तरह ?

जीजी : हम लोग उसे कार में बैठाकर ले जाएंगे।

गुड्डी तब तो कार को फूलों से सजाना होगा

मुन्नी हां मैं रात को माली के उठने से पहले ही सब फूल तोड़

लूंगी।

गुड्डी : पर, जीजी, अगर गंगाराम ने कार ले जाने को मना कर दिया, तो क्या होगा ?

जीजी : उसे तो मैं जान से मार दूंगी। अभी जाकर डैडी से कह देती हूं, अगले सोमवार को गुड्डे का ब्याह होगा, हम कार ले जाएंगे।

टुइयां : मैं दो दिन बाद आकर ही अपनी गुड़िया को ले जाऊंगा।

मुन्नी : अरे, तू फौरन ले जाना। मना किसने कर रखा है ?

जीजी : **(सहसा उछलकर)** अरे मंजू, एक बात तो मैं पूछना भूल ही गई थी !

मंजू : **(उत्सुकता से)** क्या, जीजी ?

जीजी : अगर तेरी गुड़िया का रंग तुझ-जैसा सांवला हुआ, तो क्या होगा ? हमारे घर में तो कोई लड़की सांवली नहीं है। महरी भी गोरी है।

मंजू : जीजी, मेरी गुड़िया तो बिलकुल सफेद है। ऐसा तो तुम्हारा गुड्डा भी नहीं होगा। फिर मैंने उसे आज ही सफेद कपडे पहनाए हैं।

टुइयां : क्या ? तूने पहनाए हैं या मैंने ?

मंजू : सिये किसने थे, तूने या मैंने ?

टुइयां : पैसे तो मैंने दिए थे। तू वैसे ही लाट साहबनी बनी जा रही है !

मंजू : टुइयां, मुझसे बदतमीजी की, तो मैं तेरा सिर फोड़ दूंगी।

टुइयां : **(खड़ा होकर)** तू मेरा सिर फोड़ेगी, अच्छा !

उसकी चुटिया पकड़कर खींचने लगता है। मंजू उसके जोर-जोर से दो चांटे लगाती है। टुइयां रोता हुआ, पर पीटता दरवाजे के पास जाकर जमीन पर बैठ जाता है। सब लोग एकदम चुप हो जाते हैं।

टुइयां : **(बड़बड़ाता रहता है)** तू आज घर चल, चुड़ैल, तेरी कुटन्ती न करवाई तो मेरा नाम नहीं। आज पापा से जाते ही तेरी शिकायत करूंगा। बड़ी आयी गुड़िया वाली ! मेरे पैसे खर्च मुझी को मारने चली है **रहता है)**

मंजू : जीजी, तुम इसकी परवाह मत करो। इसका तो दिमाग खराब है।

टुइयां : दिमाग तेरा खराब होगा ! तेरी बहन जी का होगा !

सब लोग हंस पड़ते हैं।

जीजी : मंजू, तुम इसे कुछ कहा मत करो।

मंजू : जीजी, इसका तो दिमाग पापा ने बहुत चढ़ा रखा है। मैं आज अम्मा से इसकी ठुकाई करवाऊंगी। सबसे बदतमीजी से बात करता रहता है।

टुइयां : **(पैर पीटकर, रोता हुआ-सा)** हां, आज तू भी घर चल। देख, तेरी भी छिटन्ती न करवाई, तो मेरा भी नाम नहीं। **(कमीज की बांह से आंसू पोंछता है।)**

गुड्डी : ग्रामोफोन बज रहा है ! मंजू जीजी, ब्याह में भी इसी का ग्रामोफोन बजवा देना।

टुइयां मुंह खिझाता है।

जीजी : अच्छा मंजू बहन, तुम सब बातों को कहीं नोट कर लो, कहीं भूल जाओ। आइसक्रीम वाली, केक वाली, जेवरों वाली, पलंग वाली, फोटो वाली....

मंजू : हाय जीजी, यह तो बहुत सारी चीजें हो गईं। यह सब मैं कैसे करूंगी ? मेरी गुल्लक में तो कुल दो रुपये साढ़े ग्यारह आने हैं। बस, थोड़े-से नये पैसे और होंगे।

जीजी : शादी-ब्याह के मौके पर पैसे का लोभ थोड़े ही किया जाता है, मंजू। किसी और से भी तो ले सकती हो। टुइयां भी तो मामा है, भात देगा।

टुइयां : **(बहुत जोर से मुंह फाड़कर)** लेने के नाम से कैसा मुंह फाड़ दिया सबने—टुइयां भी तो मामा है ! मैं तो एक फूटी कौड़ी भी किसी को नहीं दूंगा। मेरी बला से, चाहे कुछ भी हो जाए।

मंजू : अरे, जा-जा, तुझसे मांगता कौन है, मक्खीचूस ? **(धीरे से)** जीजी, इतना सब तो मैं नहीं कर सकूंगी। आप एक बार और सोच लेना अब मैं जा रही हू **कुछ उठने की मुद्रा बनाती है।)**

गुड्डी : कुछ भी हो, मंजू जीजी, हमारे गुड्डे की शादी तो शानदार होनी चाहिए। कोई ऐसा-वैसा तो है नहीं....

सहसा मुन्नी भागी हुई अन्दर आती है।

मुन्नी : जीजी, गजब हो गया !

सब लोग : **(एक साथ)** क्या हुआ ?

मुन्नी : गुड्डे को तो बन्दर ले गए ! पता नहीं कहां गया।

जीजी : **(उठकर बाहर को भागते हुए)** हाय, मेरा गुड्डा !

सब लोग उसके पीछे भागते हैं। टुइयां भी खड़ा होकर हक्का-बक्का-सा देखता रह जाता है। मंजू 'जीजी, जीजी' कहकर पुकारती है, लेकिन तब तक जीजी दरवाजे से बाहर हो जाती है। पर्दा गिर जाता है।

❁
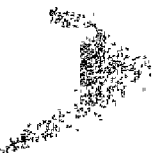
इच्छापूर्ति

❖

सत्येन्द्र शरत्

❖

एन० सी० ई० आर० टी०

द्वारा आयोजित बाल-एकांकी प्रतियोगिता

में पुरस्कृत

❖

पर्दा उठने पर मंच लगभग खाली है। दायीं ओर एक
है। उसके निकट ही एक छोटी-सी अलमारी है जिसमें
आने वाला सामान या नाटक की 'प्रॉपर्टी' रखी है। उस
स्टैण्ड पर स्कूलों में बजाई जाने वाली घंटी लटक रहं
दायीं ओर से भड़कीले वस्त्र पहने नाटक का सूत्रधार
जो भी आप उसे कहना या समझना चाहें, मंच पर अ
के बीचोंबीच--पूरे प्रकाश के ठीक सामने--आकर ख
दर्शकों का अभिवादन कर वह स्टैण्ड पर लटकी घंटी
कर बजाता है और दर्शकों की ओर मुड़कर कहता है

सूत्रधार : प्यारे बच्चो, माननीय संरक्षको और आदरणीय
बहुत शीघ्र आपके सामने एक नाटक खेला ज
हमारे देश की एक लोककथा पर आधारित है
सूत्रधार और सहायक निर्देशक हूं। (इशारे से
इस अलमारी में नाटक में काम आने वाली ची
की प्रॉपर्टी रखी हुई है। नाटक के अभिनेता

पीछे खड़े हुए हैं और मेरे घंटी बजाते ही वे रंगमंच पर आ
जाएंगे। अब आप लोग बिलकुल शांत हो जाइए, ताकि
घंटी बजा सकूं।

घंटी बजाता है और मंच के एक किनारे पर खड़ा हो जाता है
ार चंद्रचूड़, कपिलदेव और उनका छोटा भाई मंच पर प्रवे:
।

ये हमारे नाटक के मुख्य पात्र हैं। ये हैं सबसे बड़े राजकुमा
चंद्रचूड़....(**चंद्रचूड़ हाथ जोड़कर दर्शकों का अभिवादन कर**

हैं।) और ये हैं उनके छोटे भाई राजकुमार कपिलदेव....(**कपिलदेव भी हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं।**) और ये हैं इन दोनों के छोटे भैया। (**छोटे भैया सिर झुकाते हैं।**) राजकुमार चंद्रचूड़ और कपिलदेव आज मछलियों का शिकार करने जा रहे हैं और इस बात से कुछ खिन्न हैं कि उनका छोटा भाई भी उनके साथ आ गया है जबकि वे दोनों उसे मना कर चुके हैं कि तुम हमारे साथ मत चलो। राजकुमारों की छोटी बहन राजकुमारी कामनापूर्ति भी अपने भाइयों के साथ जाना चाहती थी, मगर वह कपड़े बदल ही रही थी कि राजकुमार महल से चले आये।

चंद्रचूड़ : (**खीझ के साथ**) छोटे भैया, तुम लौट जाओ। तुम अभी बहुत छोटे हो। इतने छोटे बच्चे मछली नहीं पकड़ सकते।

कपिलदेव : भाई साहब ठीक कह रहे हैं, छोटे भैया ! तुम अभी इतने छोटे हो कि हमें डर लग रहा है कि कहीं तुम सुनहरी नदी में गिर न पड़ो।

छोटे भैया : (**दृढ़ता के साथ**) मगर मंझले भैया, माताजी ने तो कहा था कि तुम अपने भाइयों के साथ मछली पकड़ने जा सकते हो.... माताजी ने तो यह भी कहा था, 'तुम्हारे बड़े भाई तुम्हारा ध्यान रखेंगे।'

चंद्रचूड़ : (**खीझकर**) हम मछलियों की तरफ ध्यान देंगे या तुम्हारा ध्यान रखेंगे ?

छोटे भैया : दोनों काम साथ-साथ कीजिएगा, भाई साहब ! मगर यह तो बताइये पहले, सुनहरी नदी है कहां ?

कपिलदेव : यहीं तो है। हम उसी के किनारे तो खड़े हैं।

छोटे भैया : (**इधर-उधर देखकर, आश्चर्य से**) कहां है सुनहरी नदी ? मुझे तो दिखलाई नहीं दे रही है।

चंद्रचूड़ : (**खिन्न भाव से**) नदी इसलिए नहीं दिखलाई दे रही है क्योंकि सूत्रधार मंच पर नदी लाना भूल गए हैं....(**ताली बजाकर**) सूत्रधार !....नदी !....जल्दी लाइए....

सूत्रधार जल्दी से अलमारी की ओर बढ़ता है और उसे खोलकर उसमें से दो बड़ी पट्टियां निकालता है मोटे कपड़े की पट्टी गहरे नीले रंग की

है और पतले कपड़े की पट्टी सुनहरे रंग की। शीघ्रता के साथ वह पहले नीले रंग की पट्टी मंच पर बिछाता है और उसके ऊपर सुनहरे रंग की पतली पट्टी।

कपिलदेव : लो छोटे भैया, नदी को अच्छी तरह देख लो, मगर ध्यान रखना, कहीं नदी में डुबकी न लगा जाओ।

छोटे भैया : नहीं, मंझले भैया, मैं इतना टुइयां थोड़े ही हूं कि नदी में गिर पड़ूं....**(नदी की ओर देखते हुए)** अच्छा, यह तो बताइए, नदी में मछलियां कहां हैं ?....मुझे तो मछलियां दिखाई नहीं दे रही हैं।

कपिलदेव : छोटे भैया, नदी का पानी बहुत गहरा है, इसलिए मछलिया तुम्हें दिखाई नहीं पड़ रही हैं।

छोटे भैया : **(नदी की ओर देख, गम्भीरता से)** मेरा ख्याल है, सूत्रधार नदी में मछलियां डालना भूल गए हैं।

सूत्रधार जल्दी से अलमारी में से रबर की कुछ रंग-बिरंगी मछलियां निकालता है और सुनहरी पट्टी पर डाल देता है।

छोटे भैया : **(खुशी से ताली बजाते हुए)** हां, अब मुझे मछलियां दिखाई दे रही हैं। ये तो बहुत बड़ी हैं।

चद्रचूड़ : **(लापरवाही से)** ये तुम्हारे लिए बड़ी हैं। अगर ये तुम्हारे काटे में फंस भी जाएं तो तुम इन्हें खींचकर बाहर नहीं निकाल सकोगे।

छोटे भैया : आप लोग हमें इतना मूर्ख क्यों समझते हैं ? मेरे हाथ में काटा आने दीजिए। तब देखिएगा, मैं कितनी बड़ी मछली पकड़ता हूं।

सूत्रधार तत्काल अलमारी से तीन बंसी या कांटे निकालकर लाता है और तीनों भाइयों को देता है। वे कांटों में चुग्गे फंसाकर बंसी पानी में डालकर मछली पकड़ने का अभिनय करते हैं।

चद्रचूड़ : **(चीखकर)** पकड़ ली....पकड़ ली !....मुझे लगता है कि बहुत बड़ी मछली है। **(कांटा बाहर निकालता है। वह बिलकुल खाली है।)** धत्तेरे की।

कपिलदेव आपने थोडी जल्दी कर दी भाई साहब मछली निकल भागी

हैं।) और ये हैं उनके छोटे भाई राजकुमार कपिलदेव....(**कपिलदेव भी हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं।**) और ये हैं इन दोनों के छोटे भैया। (**छोटे भैया सिर झुकाते हैं।**) राजकुमार चंद्रचूड़ और कपिलदेव आज मछलियों का शिकार करने जा रहे हैं और इस बात से कुछ खिन्न हैं कि उनका छोटा भाई भी उनके साथ आ गया है जबकि वे दोनों उसे मना कर चुके हैं कि तुम हमारे साथ मत चलो। राजकुमारों की छोटी बहन राजकुमारी कामनापूर्ति भी अपने भाइयों के साथ जाना चाहती थी, मगर वह कपड़े बदल ही रही थी कि राजकुमार महल से चले आये।

चंद्रचूड़ : (**खीझ के साथ**) छोटे भैया, तुम लौट जाओ। तुम अभी बहुत छोटे हो। इतने छोटे बच्चे मछली नहीं पकड़ सकते।

कपिलदेव : भाई साहब ठीक कह रहे हैं, छोटे भैया ! तुम अभी इतने छोटे हो कि हमें डर लग रहा है कि कहीं तुम सुनहरी नदी में गिर न पड़ो।

छोटे भैया : (**दृढ़ता के साथ**) मगर मंझले भैया, माताजी ने तो कहा था कि तुम अपने भाइयों के साथ मछली पकड़ने जा सकते हो.... माताजी ने तो यह भी कहा था, 'तुम्हारे बड़े भाई तुम्हारा ध्यान रखेंगे।'

चंद्रचूड़ : (**खीझकर**) हम मछलियों की तरफ ध्यान देंगे या तुम्हारा ध्यान रखेंगे ?

छोटे भैया : दोनों काम साथ-साथ कीजिएगा, भाई साहब ! मगर यह तो बताइये पहले, सुनहरी नदी है कहां ?

कपिलदेव : यहीं तो है। हम उसी के किनारे तो खड़े हैं।

छोटे भैया : (**इधर-उधर देखकर, आश्चर्य से**) कहां है सुनहरी नदी ? मुझे तो दिखलाई नहीं दे रही है।

चंद्रचूड़ : (**खिन्न भाव से**) नदी इसलिए नहीं दिखलाई दे रही है क्योंकि सूत्रधार मंच पर नदी लाना भूल गए हैं....(**ताली बजाकर**) सूत्रधार !....नदी !....जल्दी लाइए....

सूत्रधार जल्दी से अलमारी की ओर बढ़ता है और उसे खोलकर उसमें से दो बडी पट्टिया निकालता है मोटे कपड़े की पट्टी गहरे नीले रग की

है और पतले कपड़े की पट्टी सुनहरे रंग की। शीघ्रता के साथ वह पहले नीले रंग की पट्टी मंच पर बिछाता है और उसके ऊपर सुनहरे रंग की पतली पट्टी।

कपिलदेव : लो छोटे भैया, नदी को अच्छी तरह देख लो, मगर ध्यान रखना, कहीं नदी में डुबकी न लगा जाओ।

छोटे भैया : नहीं, मंझले भैया, मैं इतना टुइयां थोड़े ही हूं कि नदी में गिर पड़ूं....**(नदी की ओर देखते हुए)** अच्छा, यह तो बताइए, नदी में मछलियां कहां हैं ?....मुझे तो मछलियां दिखाई नहीं दे रही हैं।

कपिलदेव : छोटे भैया, नदी का पानी बहुत गहरा है, इसलिए मछलिया तुम्हें दिखाई नहीं पड़ रही हैं।

छोटे भैया : **(नदी की ओर देख, गम्भीरता से)** मेरा ख्याल है, सूत्रधार नदी में मछलियां डालना भूल गए हैं।

सूत्रधार जल्दी से अलमारी में से रबर की कुछ रंग-बिरंगी मछलियां निकालता है और सुनहरी पट्टी पर डाल देता है।

छोटे भैया : **(खुशी से ताली बजाते हुए)** हां, अब मुझे मछलियां दिखाई दे रही हैं। ये तो बहुत बड़ी हैं।

चद्रचूड़ : **(लापरवाही से)** ये तुम्हारे लिए बड़ी हैं। अगर ये तुम्हारे कांटे में फंस भी जाएं तो तुम इन्हें खींचकर बाहर नहीं निकाल सकोगे।

छोटे भैया : आप लोग हमें इतना मूर्ख क्यों समझते हैं ? मेरे हाथ में काटा आने दीजिए। तब देखिएगा, मैं कितनी बड़ी मछली पकडता हूं।

सूत्रधार तत्काल अलमारी से तीन बंसी या कांटे निकालकर लाता है और तीनों भाइयों को देता है। वे कांटों में चुग्गे फंसाकर बंसी पानी में डालकर मछली पकड़ने का अभिनय करते हैं।

चद्रचूड़ : **(चीखकर)** पकड़ ली....पकड़ ली !....मुझे लगता है कि बहुत बड़ी मछली है। **(कांटा बाहर निकालता है। वह बिलकुल खाली है।)** धत्तेरे की ।

कपिलदेव आपने थोडी जल्दी कर दी भाई साहब मछली निकल भागी

चद्रचूड़ : **(कांटा पानी में डालते हुए)** खैर, अब कहां जाएगी बचकर। अब तो उसे फंसना ही होगा।

सूत्रधार : **(दर्शकों से)** कितने अफसोस की बात है कि हमारे अभिनेताओ को मछली मारना भी नहीं आता। ये लोग इतनी जोर से बोल रहे हैं, मछलियां डरकर भाग गई होंगी।

छोटे भैया : **(जम्हाई लेता है)** मुझे तो मछलियां मारना ऐसा लग रहा है जैसे हम झख मार रहे हों।

चद्रचूड़ : तो कांटा छोड़ दो और उधर बैठकर आराम करो।

छोटे भैया : **(इधर-उधर देखकर)** कहां बैठूं ? चारों तरफ धूप है। कही कोई पेड़ भी नहीं है, जिसके नीचे बैठा जा सके।

चद्रचूड़ : **(सूत्रधार से)** किसी पेड़ का प्रबंध हो सकता है, सूत्रधार ?

सूत्रधार : जरा ठहरिए, लिस्ट देखकर बताता हूं। **(जेब से लिस्ट निकाल कर देखता है।)** हां, निर्देशक महोदय ने मुझे एक पेड़ का प्रबंध करने को कहा था। पेड़ अलमारी में जरूर होगा।

सूत्रधार अलमारी में से कार्ड-बोर्ड का बना एक पेड़ निकालता है और उसे मंच पर एक ओर खड़ा कर देता है।

छोटे भैया : **(जाकर पेड़ के निकट बैठकर)** अब ठीक है। अब मैं इसकी छाया में थोड़ी देर आराम करूंगा। मगर सूत्रधार, मुझे तो भूख लग आयी है।

चद्रचूड़ : हां, सूत्रधार, मुझे भी भूख महसूस हो रही है। हमारे खाने का प्रबंध करो।

सूत्रधार : **(अपनी लिस्ट को जल्दी से ऊपर से नीचे तक देखता है।)** नहीं। निर्देशक साहब ने मेरी लिस्ट में आप लोगों के लिए खाना नहीं लिखवाया था। इसलिए मैंने खाने का कोई प्रवध नहीं किया।

कपिलदेव : अब क्या होगा ? हमें तो भूख सताने लगी है।

सहसा पृष्ठभूमि से राजकुमारी कामनापूर्ति की आवाज आती है—'भाई साहब ! भाई साहब !'

चद्रचूड़ : अरे, यह तो कामनापूर्ति की आवाज है। यह यहां कैसे आ गई ?

कपिलदेव मरे ख्याल से यह हमारे पीछे-पीछे आ गई है

मारी कामनापूर्ति बायीं ओर से मच पर प्रवेश करती है उसके एक टोकरी है जिसे उसने बहुत कठिनाई के साथ उठा रखा

तो आप यहां हैं ?....अच्छा बताइए, अब तक आपने कितनी मछलियां पकड़ी हैं ?

धीरे बोलो, कामनापूर्ति, तुम्हारी आवाज से मछलियां डरकर भाग जायेंगी।

मगर तुम यहां क्या करने आयी हो ?

माताजी ने मुझसे कहा, आप लोग यहां भूखे होंगे। उन्होने आपका खाना लेकर मुझे यहां भेजा है। लेकिन अगर आप लोग चाहते हैं कि मैं यहां से चली जाऊं तो मैं चली जाती हू। **(टोकरी उठाकर वापस चलने लगती है।)**

(बनावटी मिठास के साथ) तुम खाना लायी हो ? तो फिर रुक ही जाओ। भई, तुम थक भी तो गई होगी। थोड़ी देर आराम कर लो। हम खाना खा लें, तभी चली जाना। कपिलदेव, छोटी बहन के हाथ से टोकरी ले लो। बेचारी थक गई होगी।

(टोकरी लेने के लिए आगे बढ़ते हुए) मैं तो खुद ही सोच रहा था। **(टोकरी लेकर नीचे रखता है।)** हूं ! बड़ी महक आ रही है !

ई खाना खाने का अभिनय करते हैं। सूत्रधार आगे बढ़ जाता दर्शकों को संबोधित कर कहता है।

किसी को खाना खाते हुए देखना अच्छा नहीं। खाने वालों को तो संकोच होता ही है, देखने वालों के मुंह में भी पानी आता है। जितनी देर में ये तीनों राजकुमार खाना खाते हैं, उतनी देर मे मैं आप लोगों को बतला दूं कि नाटक में आगे क्या होने वाला है। बहुत जल्दी ही एक बूढ़ी औरत यहां आएगी। देखने मे वह भिखारिन लगती है, मगर आप जरा ध्यान दीजिएगा, वह...**(बात बीच में रोक, अभिनेताओं की ओर देखकर)** अरे ! ये तो खाना खत्म कर उठकर खड़े होने वाले हैं। **(तीनों राजकुमार टोकरी एक ओर उठ खडे होते हैं)** चलू

चलकर घंटी बजा दूं ताकि बूढ़ी औरत मंच पर आ जाए और नाटक आगे चले।

सूत्रधार आगे बढ़कर घंटी बजा देता है। लाठी टेकती हुई एक बूढ़ी औरत फटे-पुराने कपड़ों में मंच पर धीरे-धीरे प्रवेश करती है। उसने लम्बा-सा चोगा पहन रखा है। वह इधर-उधर देखती है और उस जगह आ जाती है, जहां पर तीनों राजकुमार खड़े हैं।

बूढ़ी औरत : मैं बहुत थक गई हूं....मैं बहुत ज्यादा थक गई हूं !

कामनापूर्ति : बूढ़ी अम्मा, प्रणाम !

बूढ़ी औरत : **(प्रसन्नता के साथ)** प्रणाम, बेटी। सुखी रहो। बड़ी हो, और बड़ी बनो। क्या ये तुम्हारे भाई हैं ?

कामनापूर्ति : हां, बूढ़ी अम्मा ! **(हाथ से संकेत करती है।)** ये मेरे सबसे बडे भाई हैं—चंद्रचूड़ !

चद्रचूड़ : **(दर्प के साथ)** राजकुमार चंद्रचूड़ !

कामनापूर्ति : और ये हैं मंझले भैया कपिलदेव। और यह हमारा सबसे छोटा भैया। इसे हम छोटा भैया ही कहते हैं।

बूढ़ी औरत : तुम लोगों से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। **(टोकरी की ओर देखती हुई)** अच्छा, इस टोकरी में क्या रखा है ? इससे खाने-पीने की चीजों की महक आ रही है। क्या इसमें कुछ खाने-पीने को है ? मुझे बड़ी भूख लग रही है।

चद्रचूड़ : इसमें जो कुछ भी था, वह सब खत्म हो गया है। अब इसमें कुछ नहीं बचा।

कामनापूर्ति : मेरे ख्याल से इसमें कुछ गुझियां भी रखी हैं। माताजी ने वे खासतौर से तुम लोगों के लिए बनायी हैं। तुम लोगों ने उन्हे शायद देखा तक नहीं।

चद्रचूड़ : **(फुर्ती से)** हम थोड़ी देर में उन्हें भी खा लेंगे। वे हैं कितनी ?

कामनापूर्ति : **(दृढ़ता के साथ)** ठीक है। आप लोग अपने हिस्से की गुंझिया खाइए। मैं अपने हिस्से की गुझियां बूढ़ी अम्मा को देती हूं। **(टोकरी में से दो गुझियां निकालकर बूढ़ी अम्मा को दे देती है।)**

बूढ़ी अम्मा **खुशी के साथ गुझिया लेती है और चाव से उन्हें खाती हुई)**

जुग-जुग जियो, बिटिया। सुखी रहो। भगवान् तुम्हें बहुत सारा दे। तुम बहुत अच्छी लड़की हो। गुझियां सचमुच बहुत अच्छी हैं। बहुत ही स्वादिष्ट हैं। इन्हें खाते ही मेरी तमाम भूख और थकान मिट गई।

राजकुमार चंद्रचूड़ को अपनी बहन का यह भला काम पसन्द नहीं आया है। वह अपना मुंह दूसरी ओर कर लेता है और कांटा हाथ में ले नदी में डालकर मछली पकड़ने का अभिनय करने लगता है। उसकी देखा-देखी कपिलदेव और छोटे भैया भी अपने कांटे नदी में डालकर मछली पकड़ने का अभिनय करते हैं।

बूढी औरत : **(राजकुमारों को देख, आश्चर्य से)** क्यों बेटी, क्या ये लोग इस नदी में मछलियां पकड़ रहे हैं ?

कामनापूर्ति : हां, बूढ़ी अम्मा।

बूढी औरत : **(जोर से हंसती है।)** पगले कहीं के ! **(फिर हंसती है।)**

छोटे भैया : बूढ़ी अम्मा, तुम इस तरह क्यों हंस रही हो ?

बूढी औरत : **(हंसते हुए)** मुझे तुम्हारी इस मूर्खता पर हंसी आ रही है कि तुम इस नदी में मछली पकड़ने की कोशिश कर रहो हो।

कपिलदेव : **(आश्चर्य से)** लेकिन बूढ़ी अम्मा, हमने कौन-सी मूर्खता की है ? यह नदी तो मछलियों से भरी हुई है।

बूढी औरत : **(हंसती हुई)** मेरे बच्चे, मछलियां नहीं हैं। इस नदी में मछलियां हो ही नहीं सकतीं। यह मामूली नदी नहीं है। यह सुनहरी नदी है—इच्छाओं की नदी, कामनाओं की नदी ! तुम्हें इस नदी मे मछलियां पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, अपनी इच्छाए, अपनी कामनाएं पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए।

चारों बच्चे : **(एक स्वर में)** अपनी इच्छाएं पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए ?....

बूढी औरत : हां, बच्चो ! भाग्यवान लोग अपने मन में इच्छाएं लेकर उन्हे पूरी करने के लिए ही इस नदी पर आते हैं।

कामनापूर्ति : और क्या यहां उनकी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं ?

बूढी औरत : हां। इच्छाओं को कांटा डालकर इसी तरह पकडना होता है जैसे मछलियो को और जब एक बार वे पकड में आ जाती

हैं, तो फिर वे पूरी हो जाती हैं।

चंद्रचूड़ : **(दिलचस्पी से)** अच्छा, मैं कोशिश करता हूं। देखता हूं, मेरी इच्छा पूरी होती है या नहीं।

चंद्रचूड़ अपनी बंसी में चुग्गा लगाने का अभिनय करता है और यह कहते हुए उसे नदी में डाल देता है।

चंद्रचूड़ : मैंने सोच लिया है कि मैं अपनी किसी इच्छा को पूरी होने देखना चाहूंगा....**(रुककर)** मुझे लगता है, मेरी इच्छा पूरी होने जा रही है। मेरे कांटे में मछली आ गयी है। **(कांटा बाहर निकालता है। उसमें मछली फंसी हुई है। उसे देखकर प्रसन्नता से)** मछली फंस गयी। मैंने अपनी इच्छा को पकड़ लिया है। अब मेरी इच्छा जरूर पूरी होगी। होगी न ?

बूढ़ी औरत : यह बात तो मछली ही बताएगी। ध्यान से सुनो, वह क्या कहती है ?

सूत्रधार : **(आगे बढ़कर)** क्योंकि मछलियों का पार्ट करने के लिए कोई बच्चा तैयार नहीं हुआ इसलिए निर्देशक महोदय ने मुझे ही यह पार्ट करने का आदेश दिया है। अब मैं पहली मछली की तरफ से बोलूंगा। **(बारीक आवाज बनाकर)** मुझे यह बताते हुए बड़ा दुःख हो रहा है राजकुमार चंद्रचूड़ कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी।

चंद्रचूड़ : क्या सचमुच मेरी इच्छा पूरी नहीं होगी ?

बूढ़ी औरत : हां, राजकुमार ! तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी। मगर हो सकता है, राजकुमार कपिलदेव की इच्छा पूरी हो जाए।

कपिलदेव : **(आगे बढ़कर)** अब मैं कोशिश करूंगा। **(अपनी बंसी में चुग्गा लगाने का अभिनय करते हुए बंसी को नदी में डाल देता है।)** बूढ़ी अम्मा, मुझे लगता है मेरी इच्छा कांटे में फंस ही गयी है....सचमुच फंस गयी है....मैं इसे बाहर निकालता हूं। **(कांटा बाहर निकालता है। उसमें मछली को फंसी देखकर प्रसन्नता के साथ)** मछली तो फंस गयी है। लेकिन क्या मेरी इच्छा सच निकलेगी ?

बूढ़ी औरत यह तो मछली ही बताएगी

(आगे बढ़कर) दूसरी मछली का पार्ट भी मुझे करना है। **(आवाज बदलकर)** मुझे यह बताते हुए बहुत ही दुःख हो रहा है राजकुमार कपिलदेव कि तुम्हारी इच्छा भी पूरी नहीं होगी।
यह सुनकर मुझे भी बहुत दुःख हुआ, मेरे बच्चे ! मगर अब क्या किया जा सकता है ? तुम जरा छोटे भैया को भी उसकी इच्छा पकड़ने का अवसर दो।
(आगे बढ़कर) मैं कोशिश कर देखने में कोई हर्ज नहीं समझता, क्योंकि मेरी इच्छा बहुत ही अनोखी है। **(कांटे में चुग्गा लगाने का अभिनय करता है और कांटे को नदी में डाल देता है।)** अरे ! कांटा डालते ही मेरी इच्छा की मछली इसमें फंस गयी है। **(कांटा बाहर निकालता है। उसमें फंसी मछली को देख प्रसन्नता के साथ)** मेरी इच्छा बहुत ही जल्दी पकड़ाई में आ गयी है। मुझे लगता है वह बहुत ही जल्दी पूरी होगी।
यह बात तो मछली ही बताएगी।
(आगे बढ़कर) क्या मुसीबत है ? यह पार्ट भी मुझे करना है। **(आवाज बदलकर)** छोटे भैया, बहुत दुःख के साथ मुझे कहना पड़ रहा है कि तुम्हारी इच्छा भी पूरी नहीं होगी।
(क्रोध से) यह सब धोखा है। एक झूठा खेल है।
इस नदी में किसी की इच्छाएं पूरी करने की शक्ति नहीं है।
(आगे बढ़कर) क्या एक बार मैं भी कोशिश कर सकती हू, बूढ़ी अम्मा ?
(विरोध करते हुए) नहीं-नहीं। यह लड़कियों का काम नहीं है। तुम्हें इन चीजों से कोई मतलब नहीं रखना चाहिए।
मगर राजकुमार, बिटिया के एक बार कोशिश करने में हर्ज भी क्या है ?
हां, भाई साहब, एक बार उन्हें भी तो कोशिश करने दीजिए। आखिर वह हमारा खाना भी तो लायी थीं।
(बुझे मन से) अच्छा। कर लेने दो इसे भी कोशिश। जब हमारी इच्छाएं पूरी नहीं हुई तो इसकी क्या होगी ? यह कोई हम से ज्यादा सयानी है ?

कामनापूर्ति : **(छोटे भैया के हाथ से बंसी लेकर उसमें चुग्गा लगाती है और बंसी को नदी में डालती हुई, आंखें बंद कर कहती है)** यदि इस सुनहरी नदी में हमारी इच्छाएं मछलियां बनकर तैरती हैं तो मै चाहूंगी कि इस कांटे से अपनी उस इच्छा को पकड़ लूं, जिसके पूरा होने से मुझे बहुत ही सुख मिलेगा।

सूत्रधार : **(आगे बढ़कर)** यह पार्ट भी मुझे ही करना है। **(आवाज बदलकर)** मुझे यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि राजकुमारी कामनापूर्ति की इच्छा अवश्य ही पूरी होगी।

कामनापूर्ति : **(आंख खोलकर प्रसन्नता के साथ)** क्या सचमुच मेरी इच्छा पूरी होगी ?....ओह ! मुझे विश्वास नहीं हो रहा है !....मुझे सचमुच विश्वास नहीं हो रहा है !....

कामनापूर्ति के इस संवाद के दौरान बूढ़ी औरत धीरे से अपना फटा चोगा उतार देती है और अपनी लाठी नीचे डालकर सीधी खड़ी हो जाती है। उसने चोगे के नीचे बहुत ही कीमती और सुन्दर कपड़े पहन रखे हैं। अब उसे देखने से यह नहीं लगता कि वह बूढ़ी और अभावग्रस्त है।

कामनापूर्ति : **(बूढ़ी अम्मा का नया रूप देख, प्रसन्नता के साथ)** ओह ! मेरी इच्छा सचमुच पूरी हो गई !

कपिलदेव : तुमने क्या इच्छा की थी, कामनापूर्ति ?

कामनापूर्ति : मैंने यह इच्छा की थी कि बूढ़ी अम्मा फिर से स्वस्थ और निरोग हो जाएं। मैंने यह भी इच्छा की थी कि उनकी गरीबी दूर हो जाए, जिससे उन्हें कभी भूखा न रहना पड़े और उन्हे लोगों से मांगकर रोटी न खानी पड़े....और देखो, मेरी इच्छा करते ही बूढ़ी अम्मा बिलकुल बदल गयी हैं। अब उन्हें अपनी जरूरत के लिए किसी से मांगना नहीं पड़ेगा।

बूढ़ी औरत : मैं तुम्हारी आभारी हूं, बेटी। अब मैं समझ गयी हूं कि सुनहरी नदी से इच्छा मांगने का भेद तुम जान गई हो।

चंद्रचूड़ : भेद ? कैसा भेद ?....इच्छा मांगने का क्या रहस्य है ?

बूढ़ी औरत : बच्चो पहले यह तो बताओ कि तुमने क्या-क्या इच्छाएं की थीं

मैने तो इच्छा की थी कि पिताजी की तरह मेरे पास भी एक रत्नजड़ित तलवार हो जिसकी दमक से मेरे शत्रुओं की आखे चोधिया जाएं।

मेरी इच्छा थी कि मेरा एक छोटा-सा महल हो, जो सबसे अलग हो और जहां मैं शान्ति के साथ रहकर धनुष विद्या सीखूं, घुड़सवारी करूं और तरह-तरह के खेल-कूद में जीवन व्यतीत करूं....

मेरी इच्छा तो सबसे अनोखी थी। मैंने तो कल्पना की थी कि मेरे पास एक छोटा-सा विमान हो, जो मेरे इच्छा करते ही क्षण भर में मुझे नक्षत्रलोक में ले जाए और मैं आकाश के सब ग्रहो का चक्कर लगा सकूं।

(सिर हिलाती हुई) यही तो बात थी। तुम तीनों ने अपने लिए, अपने सुख के लिए इच्छाएं कीं, इसलिए वे पूरी नहीं हुई। मगर कामनापूर्ति बिटिया ने दूसरे के सुख के लिए कामना की। यही कारण था कि उसकी इच्छा पूरी हो गई और तुम लोगों की इच्छाएं पूरी नहीं हुई।

इसका मतलब यह है कि अभी हमें बहुत कुछ सीखना है।

(सोचते हुए) लगता तो ऐसा ही है।

इस संसार में हम सभी को कुछ-न-कुछ सीखना है, मेरे बच्चो। अच्छा, अब मैं भी जरा अपना भाग्य आजमाकर देखूं। **(किसी बच्चे के हाथ में बंसी लेकर नदी में डालती हुई)** सुना है, इस नदी में इच्छाएं मछली के रूप में घूमती हैं। मेरी भी एक छोटी और सीधी-सादी इच्छा है, जिसे मैं पकड़ना चाहती हूं और चाहती हूं कि वह पूरी हो जाए। और वह इच्छा यह है कि इन बच्चों ने जो मछलियां पकड़ी हैं वे सब सोने की हो जाए।

च्चे अपनी मुट्ठियों में बंद मछलियों को देखते हैं। सहसा उनके र आश्चर्य का भाव आ जाता है।

(प्रसन्नता के साथ) मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरी इच्छा पूरी हो गई मेरे बच्चो हमेशा इस बात को याद रखो कि जब भी कभी किसी चीज की इच्छा करो या किसी चीज

की कामना करो तो केवल अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी उसकी कामना करो। तभी तुम्हारी इच्छा भी पूरी होगी।

सूत्रधार : **(आगे बढ़कर)** इस प्रवचन के साथ ही हमारा नाटक समाप्त होता है। **(दर्शकों से)** आशा है, आप भी इच्छाएं करते समय हमेशा दूसरों का ध्यान रखेंगे।

सूत्रधार आगे बढ़कर घंटी बजाता है। मंच पर खड़े अभिनेता दर्शकों के सामने सिर झुकाते हैं। पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।

चंदामामा की जय

❖

मंगल सक्सेना

❖

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

समय : अर्द्ध रात्रि।

स्थान : बादलों के देश में।

रंगमंच पर एक ओर रातरानी काली पोशाक में लाल मखमली पर बैठी है। उसके सामने एक छोटी टेबिल है, जिस पर ए रजिस्टर, दवात और लिखने को पंख पड़ा है। एक लम्बे छोटी-सी हथौड़ी रातरानी के हाथ में है, जिससे शोर होने पर चु के लिए टेबिल पर ठोकने का काम लेती है। रातरानी के प दासी खड़ी पंखा झल रही है। रातरानी के दोनों ओर एक-ए खड़ा है। उनके हाथ में तारे की झंडी है। एक ओर नींद-पर नीली पोशाक, ढीली-ढाली बांहों वाला पांव तक का लम्बा चोग खड़ी है। उसने दोनों हाथ आगे की ओर बांध रखे हैं। दूस अच्छे मोटे-ताजे, खूबसूरत-से पांच बच्चे हैं। वे एक ही बेंच पर

की आयु तीन से पांच वर्ष तक है। सभी बच्चे अपनी नाइट-ड्रे
ड्रेस धारीदार चौकड़ी या और कोई इसी तरह के कपड़ों से ब
च्चे उनींदे-से बैठे हैं। सबसे छोटा बच्चा ऊंघ रहा है। बच्चों
पीछे ही दो पहरेदार खड़े हैं, जिनके चेहरों पर कागज
, बनावटी चेहरे लगे हैं। अलग एक कुर्सी पर एक और बच
बैठा है। उसने भी नाइट-ड्रेस पहन रखी है। उसके पीछे
चेहरे का पहरेदार खड़ा है। पर्दा उठता है।

ये पांच बच्चे रोने वाले बच्चे हैं, विशेषकर यह अनिल
अनिल, खड़े हो जाओ ! (अनिल खड़ा हो जाता है।)
देखिए, रातरानीजी !....
और वह सुनील....(सुनील घबराकर खड़ा हो जाता है।) य
शैतानियां करता है। सुनील, बैठ जाओ। खड़े क्यों हो गए

सुनील : **(अकड़कर)** मैंने समझा आप कहेंगी—खड़े हो जाओ। आपने कह दिया—बैठ जाओ। यह तो उल्टा हो गया ! **(बैठ जाता है।)**

रातरानी : हूं !....**(अनिल से)** तो तुम बहुत रोते रहते हो ! **(डांटकर तेज आवाज में)** तुम क्यों रोते हो ?

अनिल रोने लगता है। उसे देखकर चारों बच्चे भी रोने लगते हैं।

रातरानी : **(अपने हाथ का डंडा मेज पर पीटकर)** चुप रहो ! शान्ति !

अनिल और जोर से रोने लगता है। सभी जोर से रोने लगते हैं।

रातरानी : अरे, किसी तरह चुप तो हो जाओ ! नींदपरी, इन्हें किसी तरह चुप करो, ताकि कार्यवाही चालू की जाए।

नीदपरी : अनिल, चुप हो जाओ।

अनिल : **(रातरानी के सामने पड़ी थाली में मिठाई और फलों की ओर इशारा करके)** लड्डू खाऊंगा।

रातरानी : अच्छा-अच्छा ! नींदपरी, बांट दो, ये कार्यवाही नहीं करने देंगे।

नींदपरी लड्डू बांटती है। बच्चे चुप हो जाते हैं।

नींदपरी : रानीजी, जब मैं इन्हें यहां लायी, तो ये बड़ी कठिनाई से सोए थे और रोते-रोते सोए थे।

रातरानी : हूं !

नीदपरी : और यह सुनील—जब मैं इसे यहां लायी, तब यह घर का चाय का सामान खेल-खेल में तोड़कर और अपनी अम्मा से पिटकर सोया था।

रातरानी : हूं !....पहले सुनील पर ही मुकदमा चलेगा। और अगर यह साबित हो गया कि यह जान-बूझकर शैतानियां करता है, तो हम इसे दण्ड देंगे।

नीदपरी : मेरी प्रार्थना है, रातरानी कि इन्हें सूरज के जलते गोले से चिपका दिया जाय।

रातरानी : नहीं। हम इनके अपराध के अनुसार दण्ड देंगे। पहले इन्हें भी कुछ कहने का अवसर देंगे। **(सुनील से)** क्या नाम है तुम्हारा ?

सुनील : **(अकड़कर)** अभी बताया तो था इन्होंने—सुनील !

रातरानी तुम बहुत शैतानी करते हो

सुनील : **(भोलेपन से)** हां !

रातरानी : क्या शैतानी करते हो ?

सुनील : यह तो **(सोचकर)** पता नहीं !

रातरानी : नींदपरी, यह लड़का क्या शैतानी करता है ?

नींदपरी : जी, मैं इसकी शैतानियां बारी-बारी से सुनाती हूं....

रातरानी : **(सुनील से)** तुम्हें सफाई देनी होगी, समझे ? वरना तुम्हें सजा दे दी जाएगी।

सुनील : जी, समझा।

नींदपरी : पहली शैतानी : यह अपनी अम्मा का कहना नहीं मानता।

सुनील : **(जोर से)** अम्मा ही मेरा कहना कहां मानती हैं ?

नींदपरी : यह हर वक्त कुछ-न-कुछ खाता रहता है। खाने के समय खाना नहीं खाता है।

सुनील : मुझे हर वक्त भूख लगती है, तो मैं क्या करूं ?

नींदपरी : यह खेलने के समय खेलता नहीं, पढ़ने के समय पढ़ता नहीं—कोई काम समय पर नहीं करता है।

सुनील : **(चुप रहता है)** हुं !

रातरानी : जवाब दो।

सुनील : **(भोलेपन से)** अच्छे बच्चे बड़ों को जवाब नहीं देते, इसलिए मैं जवाब नहीं देता।

रातरानी : लेकिन तुम्हें यहां जवाब देना पड़ेगा, वरना तुम्हें सजा हो जाएगी।

सुनील : **(कुछ क्षण सोचकर)** अच्छा....मैं इसका जवाब सोचकर दूंगा।

रातरानी : नींदपरी, यह और क्या शैतानी करता है ?

नींदपरी : यह बड़ों को 'तू' कहकर बोलता है, उनका आदर नहीं करता। कभी-कभी उनको पीटकर भाग जाता है।

सुनील : अच्छा, मैंने आपको 'तू' कहा क्या ? मैंने आपको पीटा क्या ? यह तो झूठ-मूठ कहती है।

रातरानी : देखो, तुमने इन्हें 'कहती है' कहा है, जबकि तुम्हें कहना चाहिए था—'कहती हैं'। तुमने इनको आदर से कहां बोला ?

सुनील **गुस्से से)** जो झूठ बोलते है मै उनका आदर नही करता

रातरानी : चुप रहो, तुम बहुत शैतानी करते हो।

सुनील : तीन-चार शैतानियां 'बहुत' हो गईं ? बहुत कहां करता हूं ?

नींदपरी : यह लड़का बात-बात पर गुस्सा भी करता है। यह बुरी बात है।

सुनील : और बात-बात पर सबसे प्यार करता हूं, यह अच्छी बात भी तो है।

रातरानी : चुप रहो, तुम हर बात का जवाब देते हो !

सुनील : आपने ही तो कहा था, 'जवाब दो वरना सजा हो जाएगी'।

रातरानी : तुम गलत जवाब देते हो। अपनी शैतानी मंजूर नहीं करते।

सुनील : आप हर बात को ही शैतानी कह देती हैं। मैं कैसे मंजूर करूं ?

रातरानी : तुम बहुत बातूनी हो। बहुत बहस करते हो।

सुनील : मेरी मम्मी भी बातूनी हैं और मेरे पिताजी भी बहुत बहस करते हैं। वह सरकारी वकील हैं।

रातरानी : **(व्यंग्य से)** अच्छा, तुम बड़ों का मजाक उड़ाते हो ! शर्म नहीं आती तुम्हें ? हम तुम्हें कड़ी-से-कड़ी सजा देंगे।

तभी अनिल रो पड़ता है। सब बच्चे चौंककर उसकी ओर देखते हैं। फिर एक-दूसरे की ओर देखते हैं और सिर ऊंचा करके, मुंह फाड़कर रो पड़ते हैं।

रातरानी : **(चिल्लाकर)** क्यों रोते हो ? चुप रहो, वरना....! **(सब जोर-जोर से रोने लगते हैं, रातरानी गुस्से से कांपने लगती है।)**

अनिल : सुनील भैया को कड़ी-से-कड़ी सजा मत दो !

सब : सुनील भैया को सजा मत दो।

अनिल के साथ सब फिर रोने लगते हैं।

रातरानी : अच्छा, अच्छा....नहीं देंगे। कड़ी सजा नहीं देंगे, तुम चुप रहो—चुप तो हो जाओ !

सब एक साथ चुप हो जाते हैं।

रातरानी : **(अनिल की ओर इशारा करके)** तुम्हारा क्या नाम है ?

अनिल : मेरा नाम अनिल है।

रातरानी : तुम सबसे अधिक रोते हो ?

अनिल जी हां

रातरानी : क्यों रोते हो ? रोने से तुम्हें क्या मिलता है ?

अनिल : रोने से लड्डू खाने को मिलते हैं।

रातरानी : **(व्यंग्य से)** अच्छा ! और पिटाई भी तो होती है।

अनिल : **(रातरानी की नकल उतारते हुए)** चुप कराने के लिए बच्चों की बात भी तो मान लेते हैं।

रातरानी : हम तुम्हारी मम्मी को कहेंगी कि रोने पर तुम्हें पीटा करें, तुम्हारी बात न माना करें—तब ?

अनिल : तब....तब मैं जोर-जोर से रोऊंगा।

रातरानी : हम जोर-जोर से पीटने के लिए कह देंगी—तब ?

अनिल चुप रहकर सोचने लगता है।

सुनील : **(फुसफुसाते हुए)** अनिल, अनिल ! अब रोने लग, रे !

अनिल सुनिल की ओर देखकर रोने लगता है। उसकी देखादेखी सब बच्चे रोने लगते हैं।

रातरानी : **(डंडा पीटकर)** चुप करो....चुप करो....। **(बच्चे और जोर से रोने लगते हैं।)**

रातरानी : सुनील, तुम बहुत शैतान हो। हमने तुम्हारी शैतानी का सबूत पा लिया है।

सुनिल : **(अनिल से)** अनिल, चुप हो जा, भैया !

अनिल चुप हो जाता है। सब चुप हो जाते हैं।

रातरानी : तुम सब डरपोक बच्चे हो। बहादुर बच्चे कभी नहीं रोते।

अनिल : हम रोते थोड़े ही हैं, हम तो डराते हैं।

रातरानी : तुम रोकर डराते हो। बहादुर बच्चे रोकर नहीं, वीरता से डराते हैं।

सुनील : जैसे ?

नींदपरी : **(बीच में ही)** जैसे तुम्हें रोने के बजाय बहादुरी से अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए थी और वादा करना चाहिए था कि कभी भविष्य में शैतानी नहीं करेंगे !

सुनील : रोने से हमको बताशे मिलते हैं, इसलिए हम रोते हैं।

रातरानी : यह बुरी बात है। हमेशा तुम्हें रोने पर बताशे नहीं मिलेंगे। दो चार बार तुम्हारी बात सुनेगे फिर पीटे जाओगे समझे

और हम तो रोने वालों को कभी माफ नहीं करते। हम इन रोने वालों को तुम से भी कड़ी सजा देंगे।

सुनील : **(रुआंसा होकर, विनती के स्वर में)** आप दया करें। मैं प्रार्थना करता हूं, आप मुझे कड़ी सजा दें, इन्हें नहीं।

रातरानी : क्यों ?

सुनील : इन्हें मैंने ही तो रोने के लिए कहा था। आप इनका दण्ड मुझे दे दें।

रातरानी : परन्तु ये रोए क्यों ? और हम इनकी सजा तुम्हें क्यों दें ?

सुनील : ये मुझसे छोटे हैं। इन नन्हें-नन्हें बच्चों की सजा आप मुझे दे दें। मैं इनसे बड़ा हूं। सचमुच मैं बहुत शैतान हूं। मैं प्रार्थना करता हूं, आप इनकी सजा मुझे दे दें। **(आवाज रोने की-सी हो जाती है।)**

रातरानी : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इनके लिए अभी सजा सुनाती हूं। **(लिखने लगती है।)**

सुनील : देखिए, मैं अब कभी कोई शैतानी नहीं करूंगा। आप जैसा कहेंगी, वैसा करूंगा। ये समझते नहीं, इसलिए रोने लगते हैं। ये बहुत छोटे हैं, नासमझ हैं।

अनिल और साथी : हम कभी नहीं रोएंगे, परन्तु सुनील भैया को हमारी सजा न दी जाए।

सुनील : नहीं, इनकी सजा मुझे दो।

बच्चे : नहीं, इनकी सजा हमें दो।

सुनील : नहीं।

बच्चे : **(जोर से)** नहीं।

रातरानी : **(डंडा पीटकर)** शान्ति ! शान्ति ! शोर मत करो। सजा सबको मिलेगी और कड़ी मिलेगी। किसी को क्षमा नहीं किया जाएगा।

इतने में चंदामामा आते हैं।

चंदामामा : ठहरो !....

नींदपरी : चंदामामा !

रातरानी : चंदामामा ! **(खड़ी हो जाती है, सब खड़े हो जाते हैं।)**

सब बच्चे **खुशी से तालिया पीटकर** आ गए अ हा हा

चदामामा आ गए....! चंदामामा, जय हिन्द !
जय हिन्द, मेरे बच्चो, जय हिन्द। **(रातरानी से)**....रातरानी, तुम बच्चों पर अन्याय कर रही हो।
(डरकर) अन्याय कैसा, मामा ?
कैसा !....तुम्हें मालूम है, एक व्यक्ति में अगर गुण अधिक हों और बुरी आदतें कम और वह बुरी आदतें छोड़ने की प्रतिज्ञा करता है, तो उसे क्षमा कर दिया जाता है।
लेकिन, मामा, इनमें तो गुण हैं ही नहीं....सभी बुरी आदतें है !
बिलकुल गलत। तुमने इनकी बुराइयां-ही-बुराइयां जानी है। इनके गुण जाने ही नहीं। तुम्हें नहीं मालूम, इन बच्चों की बुरी आदतों से कहीं ऊंचे और अच्छे गुण हैं इनमें।
(क्रोध से) नींदपरी, तुमने हमें इनके गुण बताए, क्यों ?
(कांपकर) रानी, मुझे स्वयं नहीं मालूम। आपने सिर्फ इनकी बुरी आदतें जानने को कहा था।
यही तो बुरी बात है। किसी की बुराई के साथ-साथ उसकी अच्छाई को भी ढूंढ़ना चाहिए। हर आदमी में अच्छाइयां अधिक होती हैं, बुराइयां कम, और बुराइयां वह छोड़ भी सकता है।
चदामामा, मैं शैतानियां अवश्य करता हूं, परन्तु मैं कभी झूठ नहीं बोलता। मैं अपनी बुरी आदत को सुधारूंगा।
शाबाश ! मैं जानता हूं....और मैं यह भी जानता हूं, रातरानी, कि इन बच्चों में एक और भी बहुत बड़ा गुण है।
वह क्या ?
तुम स्वयं पूछकर देखो। यह सुनील अपने से छोटे बच्चों को कभी नहीं पीटता और उन्हें प्यार करता है।
(शर्माकर) हें हें हें हें हें !
अनिल और उसके साथी रोने वाले बच्चे अवश्य हैं, परन्तु ये अपने से बड़ों का कहना मानते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका आदर करते हैं, आपस में भी कभी नहीं झगड़ते।
सचमुच ! इनके ये गुण तो मैं अभी-अभी देख चुकी हूं। परन्तु आश्चर्य है मेरा ध्यान इधर गया ही नहीं

नींदपरी : रातरानी, ऐसे गुण वाले बच्चों को तो हमारे यहां सजा नहीं दी जाती।

रातरानी : हां, मामा, अगर ये बच्चे प्रतिज्ञा करें कि ये छोटी-छोटी बुरी आदतें भी छोड़ देंगे, तो हम इनके इन अच्छे गुणों के कारण इन्हें छोड़ सकते हैं।

सब बच्चे : हम प्रतिज्ञा करते हैं।

रातरानी : तो तुम सबको क्षमा किया जाता है।

सब बच्चे खुशी से 'चंदामामा की जय, चंदामामा की जय' करते हुए चंदामामा से लिपट जाते हैं और उनके कन्धों पर और गोदी में चढ़ने लगते हैं।

❁

हिरण्यकश्यप मर्डर केस

❖

श्रीकृष्ण

❖

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा द्वारा संचालित
बृहन्मुंबई समिति द्वारा आयोजित
हिन्दी एकांकी 'स्पर्धा' में पुरस्कृत

❖

बच्चों की अदालत। सामने दीवार पर बीचोंबीच एक तराजू बनी है जो न्याय की प्रतीक है। मंच के पिछले भाग को कुछ ऊंचा बनाने के लिए एक तख्त बिछा है। तख्त के ऊपर एक बड़ी-सी मेज और कुर्सी रखी है। मेज पर कुछ फाइलें, कलम-दवात और लकड़ी की हथौड़ी रखी है। मंच की दोनों ओर लकड़ियां खड़ी करके दो कटघरे बनाए गए हैं। तख्त के सामने दर्शकों के बैठने के लिए दो-तीन बेंचें पड़ी हैं।

पर्दा उठने पर तेरह-चौदह वर्ष का एक लड़का जज की कुर्सी पर बैठा दिखाई पड़ता है। बायीं ओर वाले कटघरे के नजदीक काला चोगा पहने बारह-तेरह वर्ष का एक लड़का खड़ा है। यह सरकारी वकील है। सभी बेंचें दर्शक-बच्चों से खचाखच भरी हैं।

दरवाजे पर एक लड़का पेटी कसे अर्दली बना खड़ा है।

तभी पुलिस के दो सिपाही भगवान् विष्णु को, जो इस समय नरसिंह-रूप में हैं, पकड़े हुए लाते हैं। उनके दोनों हाथों में हथकड़ियां पड़ी हैं। उनके कोर्ट में प्रवेश करते ही पहले तो 'शेर आ गया, शेर आ गया' का शोर मचने लगता है, लेकिन दूसरे ही क्षण, 'अरे, यह तो आदमियों

**की तरह चलता है, यह कैसा कैदी ! सारा शरीर तो इसका आदमिर्
जैसा है पर मुंह बिलकुल शेर जैसा !'—आदि आवाजें सुनाई पड़ती हैं
सिपाही विष्णुजी को ले जाकर मुलजिम के कटघरे में खड़ा कर देते हैं**

जज : **(मेज पर हथौड़ी मारकर)** ऑर्डर ! ऑर्डर !

सब चुप हो जाते हैं।

सरकारी वकील : **(जज से)** माई लॉर्ड, यही है वह खतरनाक कातिल जिसने किंग हिरण्यकश्यप का मर्डर किया है।

जज : **(आश्चर्य के साथ)** यह आधा शेर, आधा आदमी !

सरकारी वकील : हुजूर, आप इस बहरूपिये के धोखे में न आएं। कछुए के ऊपरी खोल की तरह यह इसका असली रूप नहीं है। यह तो इसने कानून के शिकंजे से बचने के लिए शेर का मुखौटा पहना हुआ है।

जज : हम समझे नहीं।

सरकारी वकील : हुजूर, अगर कोई आदमी मर्डर करे, तो उसे आप एकदम फांसी पर लटका देंगे। लेकिन अगर कोई जानवर जैसे शेर,

भेड़िया, चीता या बैल किसी आदमी को मार डाले, तो क्या आप उस पर भी कत्ल का केस चलाएंगे ?

जज : जानवरों पर भी कहीं मुकदमा चलता है ?

सरकारी वकील : बस तो, हुजूर शेर की खाल और मुखौटा पहनकर मर्डर करने में मुलजिम की यही चाल थी। इसने सोचा था कि इसे असली शेर समझकर कोई इसके नजदीक नहीं आएगा और यह चुपचाप खिसक लेगा। लेकिन, माई लॉर्ड, हमारी पुलिस की चौकन्नी और तेज आंखों से इसकी चाल छिपी न रह सकी और इससे पहले कि यह चम्पत हो जाए, उसने इसे मौके पर जा पकड़ा।

जज : हुं....**(विष्णुजी से)** तुम्हारा वकील कहां है ?

नारद : **(प्रवेश करते हुए)** नारायण, नारायण ! माई लॉर्ड, मैं उपस्थित हूं।

नारदजी वकीलों की तरह काला कोट और सफेद पतलून पहने हैं। सिर घोटमघोट है जिस पर कुतुबमीनार की तरह खड़ी मोटी चुटिया दूर से ही नजर आ रही है।

नारद : **(धीमे स्वर में विष्णु भगवान् से)** प्रभु, आप कहां आ फंसे ! यहां तो रात-दिन सच को झूठ और झूठ को सच बनाया जाता है।

जज : **(नारद से)** आप ही हैं मुलजिम के वकील ?

नारद : जी हां, मैं ही हूं इनका तीनों लोकों का रजिस्टर्ड वकील !

सरकारी वकील : मैंने पहले कभी जनाब को देखा नहीं ?

नारद : मेरे केस ज्यादातर हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट, मेरा मतलब है ऊपर की अदालतों में होते हैं, लोअर कोर्ट में यह पहला ही चांस है।

सरकारी वकील : आपकी तारीफ ?

नारद : बैरिस्टर नारद।

सरकारी वकील : नारद ! **(व्यंग्य से)** पर, महाशय, आप अपनी वीणा कहा भूल आए

नारद रेलवे के क्लाक रूम मे जमा कर आया हू बहुत ही

भारी है; फिर अब उसका फैशन भी नहीं रहा। सोचता हूं अब तो उसे जामा मस्जिद पर बेचकर 'सुपर-बाजार' से इलेक्ट्रिक गिटार या क्या कहते हैं उसे....वहीं जो मुंह से बजाया जाता है ?

जज : माउथ ऑर्गन ?

नारद : हां-हां, माउथ ऑर्गन खरीद लूं ! **(विष्णु भगवान् से)** क्यों, प्रभु, आपकी राय में क्या ठीक रहेगा—इलेक्ट्रिक गिटार या माउथ ऑर्गन ?

विष्णु : **(तनिक धीमे स्वर में)** पहले फांसी के फंदे से मेरी गर्दन तो छुड़ाओ।

जज : **(विष्णु से)** ऑर्डर ! ऑर्डर ! यह खुसर-पुसर क्या हो रही है ? जल्दी से अपना नाम बोलो।

विष्णु : नाम ? हुजूर, एक नाम हो, तो बताऊं ! विष्णु, कृष्ण, राम, हरि, लक्ष्मीपति, नारायण—जिस नाम से भी कोई भक्त याद करता है, वही मेरा नाम है।

नारद : यह नृत्य के आचार्य हैं, इसीलिए लोग इन्हें नटवर भी कहते हैं।

जज : क्या ? नटवरलाल ! वही मशहूर ठग, जिस पर मद्रास में कई मुकदमे चल रहे हैं !

नारद : नहीं, माई लॉर्ड, नहीं ! यह भक्तों के नटवर हैं, वह कुल कलंकी नटवरलाल है।

जज : ओह ! लाल है—तब जरूर वह इसका पुत्र होगा !

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, मुलजिम के अनेक नामों का होना ही यह जाहिर करता है कि यह अव्वल दरजे का 'फोर ट्वेण्टी' है। जाली नाम रख-रखकर भोले-भाले लोगों की आंखों में धूल झोंकना और उनको उल्लू बनाना ही इसका पेशा है। हुजूर, मैं दफा 302 के साथ-साथ इस पर भारतीय दण्ड-संहिता की धारा 420 का भी आरोप लगाता हूं।

नारद साक्षात भगवान् पर फोर टवेण्टी का आरोप

जज : **(विष्णु से)** कहां रहते हो ?

विष्णु : सारी दुनिया ही मेरा घर है।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे, हर शरीफ आदमी का एक-न-एक घर होता है, लेकिन इन जनाब का अपना कोई घर ही नहीं है। माई लॉर्ड, यह भी मुलजिम की आवारगी का एक सबूत है।

जज : ऑर्डर ! ऑर्डर ! **(विष्णु से)** पेशा ?

विष्णु : गरीबों, दुखियों, सताए हुओं की मदद....पापियों का नाश.... भक्तों का उद्धार....

सरकारी वकील : यह काम तो सभी डाकू और कातिल करने का दावा करते हैं। खैर, इससे पहले और कितने कत्ल किए हैं ?

नारद : माई लॉर्ड, मुझे इस प्रश्न पर सख्त आपत्ति है।

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, मैं अदालत को बताना चाहता हूं कि यह इसका पहला खून नहीं है और इससे पहले भी यह कई मर्डर कर चुका है। हुजूर, यह पेशेवर कातिल है।

जज : यह आप कैसे कह सकते हैं ?

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, पुलिस से प्राप्त इसका यह हिस्ट्री-शीट इसका सबूत है। मथुरा की पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार यह हजरत वहां भी 'कृष्ण' के जाली नाम से 'कंस' का मर्डर करके भागे हुए हैं और पुलिस अरसे से इनकी तलाश में है।

नारद : माई लॉर्ड, मैं जानता हूं कि मेरे मुवक्किल ने कंस का वध किया, लेकिन सवाल उठता है कि उसने ऐसा क्यों किया ? हुजूर, उसे मजबूर किया गया इसके लिए।

जज : किसने किया मजबूर ?

नारद : हुजूर, उसी गुण्डों के सरदार कंस ने। उसने मेरे मुवक्किल के डैडी-मम्मी को ही अपने यहां कैद नहीं किया, उसके नन्हे-मुन्ने सात भाई-बहनों को भी बड़ी बेरहमी से गला घोंटकर और पत्थर पर पटक-पटककर मार डाला। मेरे मुवक्किल के पीछे भी पूतना, बकासुर, अघासुर, शकटासुर, वत्सासुर, प्रलम्बासुर, धेनुकासुर आदि अपने कई 'गुण्डे' लगाए इतना ही नहीं मेरे मुवक्किल को धोखे से अपने घर बुलवाकर उस पर हमला

किया। आखिर जनता की जान की हिफाजत के लिए इसे उस नीच का वध करना ही पड़ा।

ल माई लॉर्ड, विश्वप्रसिद्ध प्राइवेट डिटेक्टिव मि॰ तुलसीदास की विस्तृत रिपोर्ट 'रामायण' के अनुसार 'राम' के जाली नाम से यह लंका के राजा 'रावण' का भी मर्डर कर चुका है। माई लॉर्ड, लंका हमारा पड़ोसी ही नहीं, सदियों पुराना मित्र देश है। इसके इस कुकृत्य से हमारे अंतर्राष्ट्रीय शांति प्रयत्नों को बहुत धक्का पहुंचा है। हुजूर, इसकी इस देशद्रोहपूर्ण हरकत से साबित हो गया है कि मार-काट, तोड़-फोड़ और खून-खराबी की नीति में विश्वास रखने वाले विस्तारवादी चीन से इसका जरूर ही कोई संबंध है।

माई लॉर्ड, वह दुष्ट 'रावण' मेरे मुवक्किल की धर्मपत्नी को उठाकर ले गया था। मैं अपने **(सरकारी वकील की ओर इशारा करके)** सम्माननीय मित्र से पूछना चाहूंगा कि अगर कोई इनकी वाइफ को उड़ाकर ले जाए, तो क्या इनका खून नहीं खौल उठेगा ?

ल तो इसके लिए पुलिस में रिपोर्ट करनी थी। पुलिस अपने-आप उनसे निपटती रहती। कानून कसूरवार को अपने-आप सजा देता। कानून को अपने हाथ में लेकर सजा देने वाला यह कौन था ? हुजूर, मैं इस पर कानून की मर्यादा भंग करने का भी आरोप लगाता हूं।

(कानों पर हाथ रखकर) कैसा घोर कलयुग आ गया है ! नारायण, नारायण !

ल माई लॉर्ड, इजाजत हो, तो अब मैं कुछ गवाह पेश करूं, जो आज के मुकदमे पर रोशनी डालने के साथ-साथ, मुलजिम की करतूतों का भी पर्दाफाश करेंगे।

इजाजत है।

ल हुजूर, मेरी सबसे पहली गवाह हैं मिस खप्परभरनी।

(पुकारकर) मिस खप्परभरनी हाजिर हैं ? **(स्वतः)** बाप रे !

कराल औरत गवाह के कटघरे में आकर खड़ी हो जाती है

जज : आपका इस मुकदमे से क्या संबंध है ?

मिस खप्परभरनी : जी, मैं बेबी प्रह्लाद की आया हूं।

नारद : आया कि आयी ?

सब हंसते हैं।

जज : **(मेज पर हथौड़ी मारकर)** ऑर्डर ! ऑर्डर ! **(नारद से)** गवाह को बोलने दें, उसे डिस्टर्ब न करें। हां तो, मिस खप्परभरनी ! आप **(विष्णु की ओर इशारा करके)** मुलजिम के बारे में क्या जानती हैं ?

मिस खप्परभरनी : हुजूर, यह अक्सर घंटों बेबी प्रह्लाद से अकेले में मिला करता था और पता नहीं उसे क्या-क्या उल्टे-सीधे पाठ पढ़ाता था। इसने बेबी को इस कदर अपने वश में कर लिया था कि बेबी रात को नींद में अक्सर इसका नाम लेकर चौंक पडता था और ऊल-जलूल बड़बड़ाया करता था। इसकी संगत के कारण बेबी हाथ से बिलकुल निकल गया था; यहां तक कि अपने डैडी का भी कहा बिलकुल नहीं सुनता था, उल्टे बात-बात में उन्हें जवाब देता था और उनसे उलझता था।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे कि इसने एक नाबालिग बच्चे को गुमराह किया और अपने डैडी के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाया। माई लॉर्ड, यह एक बहुत ही संगीन जुर्म है।

नारद : भगवद्-भक्ति को आप जुर्म कहते हैं ! नारायण, नारायण !

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, दूसरे गवाह के रूप में अब मैं मास्टर कोड़ाराम को हुजूर के सामने पेश करता हूं।

मास्टर कोड़ाराम आते हैं। हाथ में स्कूल-मास्टरों की तरह एक मोटा-सा रूल है। आंखों पर ऐनक चढ़ी है।

जज : आप इस मुकदमे के बारे में क्या जानते हैं ?

कोडाराम : हुजूर, बहुत-कुछ। मैं दावे के साथ कहता हूं कि बेबी प्रह्लाद के डैडी का मर्डर इसने **(विष्णु की ओर संकेत कर)** किया है।

जज : क्या तुमने मुलजिम को मर्डर करते अपनी आंखों से देखा है ?

कोड़ाराम : नहीं, हुजूर।

जज फिर तुम यह कैसे कह सकते हो

इसलिए कि बेबी प्रह्लाद मेरे ही 'सेक्शन' में पढ़ता था। हुजूर, यह अक्सर अपने सहपाठियों को उकसाकर उनसे 'पेन-डाउन स्ट्राइक' करा देता। उनका नेतृत्व कर उनसे **(विष्णु की ओर संकेत कर)** इसके नाम के नारे लगवाकर उन्हें मुलजिम के मुजरिमाना कारनामे सुनाता। हुजूर, इन्हीं बातों से मुझे पूरा यकीन है कि इसी ने मर्डर किया होगा।

ोल : माई लॉर्ड, मैं मुलजिम पर स्टूडेण्ट्स में 'पैनिक' फैलाने, उन्हें शासन के विरुद्ध बरगलाने, स्ट्राइक कराने, मीटिंगों और नारेबाजी में टाइम गंवाने के लिए उकसाने का आरोप लगाता हू।

प्रभु के कीर्तन और स्तुति को आप नारेबाजी कहते है ! नारायण, नारायण !

ोल - इतना ही नहीं, माई लॉर्ड, इस शैतान की आंत ने साइस के मामूली करिश्मे दिखाकर लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया।

यह झूठ है, माई लॉर्ड ! मेरे अजीज दोस्त अपने इस आरोप के पक्ष में क्या कोई सबूत दे सकते हैं ? मैं कहता हूं वह भगवान् की लीला थी।

ाल हां-हां, क्यों नहीं ? बिल्ली के बच्चों के कुम्हार के जलते आवे में से जिंदा निकलने वाली घटना को ही ले लें। 'फायर प्रूफ सोल्यूशन' लगाकर बिल्ली के बच्चों को इन जनाब ने पहले से ही कुम्हार के आंवे में छिपा छोड़ा था। फिर आग मे से उनका जिंदा निकल आना तो 'नेचुरल' ही था। इसमे 'लीला' कहां से आ घुसी ?

नारायण, नारायण ! फिर तो आप प्रह्लाद के आग में से सही-सलामत निकल आने, लेकिन उसकी आंटी 'होलिका' के जल जाने वाली घटना को भी शायद 'विज्ञान की करामात' ही कहेंगे ?

ल 'एक्जैक्टली'। दोनों 'सिमिलर' केस हैं। सिर्फ इतना फर्क है कि बिल्ली वाले केस में तो फायर प्रूफ सोल्यूशन' यूज

किया गया था, लेकिन प्रह्लाद के केस में 'फायर-प्रूफ' कपडे।

नारद : नारायण, नारायण ! प्रभु, आज तो हम घोर नास्तिकों मे आ फंसे।

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, अब मैं किंग हिरण्यकश्यप के चीफ महावत मि॰ हस्तीदमन को गवाह के रूप में पेश करूंगा।

एक लम्बा-चौड़ा आदमी, हाथ भर का अकुंश लिये, आकर गवाह के कटघरे में खड़ा हो जाता है।

जज : मि॰ हस्तीदमन, तुम मुलजिम को जानते हो ?

हस्तीदमन : हुजूर, आप जानने की बात कहते हैं, मैं इसका सताया हुआ हूं।

जज : पहेलियां न बुझाओ, पूरा किस्सा बयान करो।

हस्तीदमन : हुजूर, जब राजकुमार प्रह्लाद राज्य के खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह पर उतर आया और महाराज के लाख समझाने-बुझाने और तरह-तरह की धमकियां देने के बावजूद उस पर कोई असर नहीं हुआ तो, महाराज ने सोचा कि ऐसी कुलकलकी और देशद्रोही औलाद से तो बेऔलाद होना बेहतर है। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। सो उन्होंने मुझे बुलाकर हुक्म दिया कि सुबह होते ही मैं उस गद्दार को खूनी हाथी के आगे डाल दूं।

जज : वेरी इंटेरेस्टिंग केस ! फिर क्या हुआ, मि॰ एच॰ डी॰ ?

हस्तीदमन : हुजूर, मैं तो ड्यूटी निपटाकर रात में घर चला गया। पता नही **(विष्णु की ओर इशारा करके)**, इसने मेरे पीछे रातोंरात क्या गुल खिलाया और पहरेदारों को क्या सुंघा दिया कि जब मे 'मार्निंग' में सरकारी हुक्म की तामील करने के लिए ड्यूटी पर पहुंचा, तो पाया कि पहरेदार सब बेहोश हैं और खूनी हाथी का रंग-ढंग भी बदला हुआ है।

जज : तुम्हारा मतलब है इसने खूनी हाथी गायब करके उसकी जगह पालतू हाथी ला खड़ा किया ?

हस्तीदमन : नहीं, हुजूर, हाथी तो वही था, लेकिन न जाने इसने उसे क्या सिखा दिया था कि जो हाथी एक रात पहले तक आदमी की

गध पाते ही खूंखार हो उठता था और काबू से बिलकुल बाहर हो जाता था, वह एक ही रात में इतना बदल गया था कि जब मैंने बेबी प्रह्लाद को उसके आगे डाला, तो उसने उसे पैरों के नीचे न कुचलकर, सूंड़ से उठाकर अपने मस्तक पर बैठा लिया। हुजूर, स्वर्गीय महाराज ने समझा कि मैं मुजरिम के साथ मिला हुआ हूं। बस, उन्होंने मुझे उसी समय 'नोटिस' दे दिया। हुजूर, मैं तो बेमौत मारा गया। 'गवर्नमेंट सर्विस' हाथ से गयी सो गयी, तीन महीने की जेल अलग काटनी पडी। और यह सब आफत आयी **(विष्णु की ओर इशारा करके)** इसके कारण !

ल · माई लॉर्ड, अब मैं अपने अगले गवाह, किंग हिरण्यकश्यप के हेड जल्लाद चरमसुख को पेश करता हूं।

ब्र उपस्थित होता है।

तुम इस मुकदमे पर क्या रोशनी डाल सकते हो ?

हुजूर, जब इसकी साजिश से प्रह्लाद खूनी हाथी से भी बच गया, तो मरहूम बादशाह ने मुझे तलब किया और हुक्म दिया कि उस आफत के परकाला प्रह्लाद को मैं पहाड़ से गिराकर मार डालूं।

तो तुमने राजकीय आदेश का पालन किया ?

क्यों न करता, सरकार ? जिसका नमक खाता हूं, उसका हुक्म भी बजाता हूं। लेकिन, हुजूर, मैं तो ताज्जुब में रह गया कि मैंने इतने ऊंचे से उस संपोले को गिराया, फिर भी उसके बदन पर कहीं खरोंच तक नहीं आयी !

(आश्चर्य से) ऐसा कैसे हो सकता है ! नामुमकिन ! जरूर इसमें तुम्हारा भी हाथ रहा होगा, मि॰ चरमसुख ?

नहीं, हुजूर, मैं तो बेकसूर हूं। सब शरारत **(विष्णु की ओर इशारा करके)** इसी की है। इसने जासूसों के जरिए पूरी टोह पा ली और पहले से ही अपने एजेंटों की मदद से पहाड़ के नीचे 'डनलपिलो' के गद्दे बिछवा दिए।

ल माई लार्ड मुलजिम के अपराधो की सूची में यह एक जुम

और बढ़ा। और, हुजूर, मुझे पता चला है कि जिस 'डीलर' से इन्होंने 'डनलपिलो' के गद्दे किराये पर मंगाए थे, वह भी अपने भुगतान के लिए इस पर नालिश करने वाला है।

नारद : नारायण, नारायण !

जज : **(सरकारी वकील से)** हमने इन सभी गवाहों के बयान सुने। इन बयानों से यह तो साबित हो गया कि मुलजिम पक्का षड्यंत्र- कारी और गिरोहबंद है। लेकिन इसके सबसे सगीन जुर्म यानी हिरण्यकश्यप के मर्डर का चश्मदीद कोई गवाह अभी तक पेश नहीं हुआ है।

सरकारी वकील : माई लॉर्ड, अब मैं आखिरी गवाह साक्ष्यजीवी को पेश करूंगा। वह मर्डर का चश्मदीद गवाह है।

जज : साक्ष्यजीवी को हाजिर किया जाए।

चपरासी : **(आवाज देकर)** छाछजीवी हाजिर है ?

साक्ष्यजीवी आता है।

जज : **(साक्ष्यजीवी से)** तुमने मुलजिम को मर्डर करते अपनी आखो से देखा है ?

साक्ष्यजीवी : हां, हुजूर, अभी तक वह भयानक दृश्य जैसे मेरी आंखो के आगे घूम रहा है।

जज : पूरा किस्सा सही-सही बयान करो।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैंने देखा कि वेबी प्रह्लाद खंभे से बंधा हुआ था और महाराज नंगी तलवार हाथ में लिये उससे कह रहे थे कि 'आज तू मेरे हाथ से नहीं बच सकेगा। बुला ले अपने हिमायती को !'

जज : लेकिन तुम उस समय राजमहल में क्या करने गए थे ?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैं नगर निगम के बिजली विभाग में काम करता हू। किंग के महल-सेक्रेटरी ने रिपोर्ट की थी कि राजमहल की बिजली फेल हो गयी है, मैं वहां उसी सिलसिले में गया था।

जज : दिन के समय गए कि रात के ?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, उस समय न दिन था, न रात।

जज यह क्या मजाक है

ल माई लॉर्ड, गवाह ठीक ही कहता है। पुलिस की भी रिपोर्ट है कि जिस समय मर्डर हुआ, वह झुटपुटे का टाइम था।
(साक्ष्यजीवी से) आगे बयान करो।
हुजूर, महाराज का इतना कहना ही था कि बड़े जोर का धमाका हुआ। ऐसा लगा जैसे खंभा फट गया हो और चारो ओर धुआं-ही-धुआं भर गया, मानो पुलिस ने अश्रुगैस छोड़ दी हो। मेरी तो आंखें बंद हो गयीं, हुजूर ! जब धुआं कुछ हल्का हुआ, तो मैंने देखा....
क्या देखा तुमने ?
मैने देखा, हुजूर, कि मुलजिम महल की देहरी पर, बैठा हिरण्यकश्यप को अपनी जांघों पर रखे उसका पेट चाक कर रहा था।
उसके हाथ में क्या हथियार था ?
हुजूर, जिस तरह शिवाजी ने बघनखे से अफजल खां की आते खीच ली थीं, उसी तरह की कोई चीज इसके पंजे में थी।
ल · माई लॉर्ड, साक्ष्यजीवी के बयान से साफ जाहिर है कि मुलजिम ने ही हिरण्यकश्यप का मर्डर किया है। मैं अदालत से अपील करता हूं कि 'इंडियन पैनल कोड' की दफा 302 के अधीन मुलजिम को फांसी की सजा दी जाए।
नारायण, नारायण ! प्रभु, इस पापी को तो घोर नरक मे डालना।
(मेज पर हथौड़ा मारकर) ऑर्डर ! ऑर्डर ! **(विष्णु से)** तुम्हे अपनी सफाई में कुछ कहना है ?
नारायण, नारायण ! कहना बहुत कुछ है। सरकारी गवाहों के बयान से यह साफ जाहिर है कि मर्डर न दिन में हुआ, न रात को, न महल के अन्दर हुआ, न बाहर; न आदमी ने किया, न जानवर ने। फिर, आखिरी गवाह का नाम ही यह जाहिर करता है कि इसकी जीविका ही झूठी गवाहियां देना है। इसके अलावा, माई लॉर्ड, जिस हथियार से मर्डर हुआ बताया जाता है वह भी पुलिस ने बरामद नहीं किया और सबसे आखिरी

बात यह है कि जिस हस्ती के खिलाफ यह इलजाम लगाया गया है वह इंसानी इंसाफ से परे है। बस, मुझे यही कहना है।

ज : **(सरकारी वकील से)** आपको कुछ कहना है ?

रकारी वकील : **(उछलकर)** माई लॉर्ड, बचाव पक्ष के वकील ने अपनी बहस से यह साफ कर दिया है कि मर्डर करने के लिए मुलजिम ने जो एहतियातें बरती थीं वे कितनी पोच थीं। मर्डर किसी भी वेश में किया गया हो, मुलजिम ने ही किया है यह बात गवाहों ने साफ कर दी है। रही मेरे आखिरी गवाह के नाम की बात, सो कूड़ामल धनपति होते हैं, धनीराम कंगाल होते हैं, ज्ञानप्रकाश कोरे बुद्धू होते हैं, आदि-आदि। जहां तक मुलजिम की ऊंची हस्ती का सवाल है—यह सिर्फ बहाना है। बस, मुझे यही कहना है।

ज : फैसला हो गया—गले में रस्सी का फंदा डालकर लटकाए रखा जाए कि जब तक दम न निकल जाए !

रदजी : नारायण, नारायण !

भगवान् विष्णु खटाक् से शेर का सिर अपने कंधों से उतारकर फेंक देते हैं। एक लड़का उनकी जगह लाल आंखें किए खड़ा दिखाई देता है।

ड़का : **(रोनी-सी आवाज में)** पर मेरा दम तो अभी निकला जा रहा है। मुझसे कहा गया था कि बस पांच मिनट खड़े रहना है। यह तो अदालत की कार्रवाई क्या हो गयी, थर्ड वर्ल्ड-वार हो गया। जाओ, मैं नहीं बनता भगवान्-वगवान् !

कटघरे से निकलकर भाग लेता है। सब खड़े होकर चिल्लाते हैं : 'अरे, पकड़ो, पकड़ो !' नारदजी की **'नारायण, नारायण'** भी **सुनाई पड़ती है।**

पर्दा गिरता है।

❃

भूख-हड़ताल

विनोद कुमार भारद्वाज

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

पहला दृश्य

पर्दा उठने पर एक कमरे में संजय, राजू और मीना कुर्सियों पर बैठे दिखाई देते हैं। तीनों चुप हैं, लेकिन संजय चिंतित दिखाई पड़ रहा है। एकाएक संजय कुर्सी से उठ खड़ा होता है। राजू और मीना कुछ आश्चर्य से उसकी ओर देखते हैं, लेकिन संजय चुपचाप इधर-उधर चक्कर काटता रहता है।

ाय : (कुर्सी पर बैठते हुए) आखिर किया भी क्या जा सकता है ? सब कुछ तो पिताजी की मर्जी से होता है....

ा : लेकिन उन्होंने साफ मना कर दिया है। मां को तो मैंने मना लिया था, पर ये रुपये तो पिताजी के राजी होने पर ही मिल सकते हैं।

य : अगर पिताजी मान जाएं, तो बात ही क्या है ! छज्जू के पिताजी तो फौरन मान गए, उसी समय पन्द्रह रुपये निकालकर दे दिए।

ा : हां, तभी तो वह हमारे सामने बड़ी शान मार रहा था। कैसा

अकड़कर कह रहा था कि उसके बड़े भाई साहब साथ में ले जाने के लिए उसे अपना कैमरा दे देंगे....

(बुजुर्गाना आवाज में) तो तुम दोनों उसे देख जलते क्यों हो ? अगर तुम दोनों ने मेरी तरह एक गुल्लक खरीद ली होती, तो आज पिताजी के सामने हाथ न पसारना पड़ता।

(चौंककर) गुल्लक ?

अरे, हां, मीना तो गुल्लक में पैसे जमा करती है। **(प्यार से)** क्यों री, मीना, तेरी गुल्लक में तो काफी रुपये होंगे ?

(हंसकर) रुपये ? अजी, भाई साहब, एक रुपये की रेजगारी भी नहीं होगी उसमें। अभी मुश्किल से दो दिन तो बीते हैं अपनी गुड़िया का ब्याह रचाए....

(मुंह लटकाकर) गुड़िया के ब्याह में तो पानी की तरह पैसा बहाया। यहां तक कि हरेक बाराती को डटकर मिठाई खिलाई और दहेज....राम-राम-राम ! इत्ता सारा दहेज उस निगोड़ी सरिता के गुड्डे के पास चला गया।

: **(गुस्से में)** अपनी गुड़िया के ब्याह का खर्चा चुकाने के लिए तुम्हारे आगे तो झोली पसारी नहीं थी। दो साल से गुल्लक मे पैसा जमा कर रही थी। अगर गुड़िया के ब्याह में खर्च कर भी दिए, तो तुम्हें ताना कसने की क्या जरूरत है ?

: **(संजय से)** इससे तुम बात ही न करो। पहले क्या कभी इसने सहायता की है हमारी, जो आज करेगी।

: और क्या, सहायता तो बहुत दूर की बात है, सदा मां के सामने हमारी चुगलियां करती रहती है। अब हम आगे से इसे अपनी कोई बात नहीं बताएंगे।

: **(कुर्सी से उठकर)** न बताओ, न बताओ। मुझे क्या लेना है तुम दोनों की उल्टी-सीधी बातें सुनकर !

: हां-हां, अब तो बड़ी तीखी होकर बोल रही है। अभी कल ही तो हाथ-पांव जोड़ रही थी जामुन के पेड़ वाला किस्सा सुनने के लिए....

: वाह-वाह ! उस समय तो आप ही बोले जा रहे थे, मुझे क्या लेना-देना था मरे जामुन के पेड़ वाले किस्से से !

: तो फिर अब क्यों यहां बैठी हमारी बातें सुन रही हो ? जाओ, जाकर गुड्डे-गुड़िया का ब्याह रचाओ !

: गुड्डे-गुड़िया का ब्याह तो रचाऊंगी ही, लेकिन तुम दोनों को पास भी न फटकने दूंगी....

: अच्छा, बहनजी, **(हाथ जोड़कर नाटकीय ढंग से)** मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूं, हमें बख्शिए भी।

ना गुस्से में पांव पटकती हुई दायीं ओर के प्रवेश-द्वार से घर के न्दर चली जाती है।

(सोचते हुए) कल तक मास्टर साहब के पास रुपयों का जमा कराना भी तो जरूरी है। बाद में तो वह रुपये लेंगे भी नही। और क्या, दशहरे की छुट्टियां भी तो होने वाली हैं। **(कुछ रुककर)** सभी लड़के जा रहे हैं। फिर पन्द्रह रुपये की ही तो बात है। सोचो जरा, पन्द्रह रुपयों में आगरा की सैर।

मास्टर साहब कह रहे थे कि स्कूल की ओर से भी कुछ रुपया

मिलेगा।

राजू और संजय दोनों ही कुछ देर तक चुप रहते हैं।

राजू : **(एकाएक उछलकर)** मैंने सोच लिया ! मैंने सोच लिया !

सजय : **(उत्सुक होकर)** क्या सोच लिया ?

राजू : तरीका—रुपये पाने का तरीका !

सजय : **(झल्लाकर)** ओफ्फोह ! कुछ बताओ भी या यों ही चिल्लाते रहोगे ?

राजू : बताने ही तो जा रहा हूं। **(इधर-उधर देखते हुए)** कहीं मीना हमारी बातें न सुन रही हो !

सजय : **(दायीं ओर के प्रवेश-द्वार की ओर दृष्टि डालकर)** तुम बताओ तो, मीना मां के पस रसोईघर में है।

राजू : **(पास आकर भेदभरे स्वर में)** तरीका बड़ा आसान है। बस मेरी समझ में यही एक तरीका है पिताजी से रुपये लेने का।

सजय : **(झुंझला उठता है।)** मैं कहता हूं, तुम पहेलियां क्यों बुझा रहे हो ?

राजू : संजय भैया, तुम तो नाराज हो गए ! **(धीमे से)** क्यों न रुपये पाने के लिए हम लोग भूख-हड़ताल करें ?

सजय : **(आश्चर्य से)** भूख-हड़ताल ? लेकिन इससे फायदा क्या होगा ?

राजू : भैया, तुम तो इत्ती छोटी-सी बात भी न समझ सके। लोगों को सरकार से जब कोई बात मनवानी होती है, तो वे भूख-हड़ताल नहीं करते हैं क्या ?

सजय : वह तो ठीक है, राजू, लेकिन पिताजी फिर भी न मानेंगे। बेकार में ही हमें भूखे रहना पड़ेगा।

राजू : देख लेना, भैया, आखिर पिताजी को हार माननी ही पड़ेगी। और फिर कौन-सा दस-बारह दिन हमें भूखा रहना पड़ेगा ? तीन-चार घंटे की भूख-हड़ताल से ही काम बन जाएगा, बस, तुम्हें अगर एतराज न हो....

सजय : भला मुझे क्या एतराज है ! भूख-हड़ताल करके भी देख लेते हैं

राजू ठीक है ᳚म भूख करेगे **जरा जोर से** हा हा हम

भूख-हड़ताल करेंगे !

दायीं ओर के प्रवेश-द्वार से बच्चों की मां कुसुम का प्रवेश।

कुसुम : **(चकित स्वर में)** अरे-अरे, यह क्या कह रहे हो ?

राजू : **(खड़ा हो जाता है।)** मां, हम दोनों भूख-हड़ताल करने जा रहे हैं।

कुसुम : लेकिन आखिर माजरा क्या है ?

राजू : माजरा ? वाह, मां, अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को दूर करने के लिए भूख-हड़ताल करना जरूरी है। हमें स्कूल की ओर से 'टूर' में जाने के लिए पन्द्रह-पन्द्रह रुपये मिलने ही चाहिए।

संजय : हां, मां, नहीं तो हम अपनी भूख-हड़ताल जारी रखेंगे। तब आपको हमारी मांग को पूरा ही करना पड़ेगा।

कुसुम : मुझसे क्या कह रहे हो, अपने पिताजी से कहना। वही तुम दोनों की मांग पूरी करेंगे।

राजू : इसीलिए तो हम अपनी भूख-हड़ताल शुरू करने जा रहे हैं। जब तक पिताजी हमारी मांग नहीं पूरी करेंगे, तब तक यह भूख-हड़ताल बंद नहीं होगी।

कुसुम : तब तुम दोनों अपना अड्डा घर के बाहर जमा लो, ताकि मुहल्ला भर भूख-हड़ताल के बारे में जान जाए....

राजू : नहीं, हमारा अड्डा यहीं जमेगा....**(जरा जोर से)** इसी कमरे में जमेगा !

संजय : ठीक है, ठीक है....

दूसरा दृश्य

पर्दा उठने पर उसी कमरे का दृश्य दिखाई पड़ता है। कमरे की लाइट अब जल रही है। संजय और राजू कुर्सियों पर चुपचाप बैठे हैं। पीछे दीवार पर एक दफ्ती लटकी हुई है, जिस पर स्याही से मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है—'भूख-हड़ताल'। दीवार घड़ी रात के आठ बजाने को है।

राजू **(अंगड़ाई लेकर)** जाने क्या बात है पिताजी ऑफिस से अभी तक नही लौटे रोज तो सात ही बजे

अब घबराते क्यों हो, आते ही होंगे।

(दायीं ओर के प्रवेश-द्वार की ओर देखकर) रसोईघर मे से खुशबू-सी आ रही है। शायद मां पकौड़े तल रही है।

पकौड़े ? **(होंठों पर जीभ फेरता है।)** मेरे ख्याल से आलू के पकौड़े हैं !

(हाथ मलते हुए) देख लेना, भैया, अकेली मीना ही सारे-के-सारे पकौड़े चट कर जाएगी। हम दोनों के लिए एक भी न बचने पायेगा।

और क्या, आज तो मीना की पांचों उंगलियां घी में हैं। **(कुछ रुककर)** मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि भूख-हड़ताल करने से कोई फायदा न होगा।

लेकिन, भैया, मुझे क्या पता था कि मां को पकौड़े भी आज ही तलने हैं।

(कुछ सोचकर) अभी भी हड़ताल बन्द की जा सकती हे, राजू !

भैया, जब ओखली में सिर दे ही दिया है, तो फिर मूसलों की क्या परवाह ! जब तक पिताजी हमारी मांग पूरी करने को तैयार नहीं होंगे, तब तक हड़ताल बन्द नहीं होगी। **(जोश में आकर)** हरगिज नहीं ! हमें 'टूर' में जाने के लिए रुपये मिलने ही चाहिए !

र के प्रवेश-द्वार से बच्चों के पिता रामनाथ आते हैं, मिठाई के डिब्बे उनके हाथ में हैं।

('भूख-हड़ताल' की दफ्ती पढ़कर) भूख-हड़ताल !....**(संजय और राजू की ओर देखकर)** भई, यह क्या बात है ?

पिताजी, हम दोनों ने भूख हड़ताल की है।

यह तो मैंने भी दफ्ती पढ़कर जान लिया है, लेकिन इस भूख-हडताल के माने ?

माने बहुत साफ हैं, पिताजी, अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को दूर करने के लिए भूख हड़ताल करना ही एकमात्र उपाय रह गया है

रामनाथ : **(आश्चर्य से)** अत्याचार ? कौन-सा अत्याचार ? कैसा अत्याचार ?

राजू : पिताजी, स्कूल के 'टूर' में जाने के लिए हम दोनों को रुपये न देना, अत्याचार नहीं तो और क्या है ?

संजय : **(हां-में हां-मिलाते हुए)** हां, पिताजी, यह सरासर अन्याय और अत्याचार है !

रामनाथ : **(हंसते हुए)** तो यह बात है....ठीक है, भई, हड़ताल जारी रखो।

रामनाथ उसी तरह हंसते हुए दायीं ओर के प्रवेश-द्वार से घर के अन्दर चले जाते हैं।

संजय : **(राजू की ओर आश्चर्य से देखते हुए)** हैरत की बात है, पिताजी पर तो हमारी भूख-हड़ताल का कोई प्रभाव न पड़ा !

राजू : हां, भैया, मैं तो सोच रहा था कि पिताजी घबरा जाएंगे, बार-बार भूख-हड़ताल बन्द करने के लिए मिन्नतें करेंगे।

संजय : लेकिन हुआ ठीक उल्टा ही। उन्होंने हड़ताल जारी रखने के लिए कह दिया है।

राजू : खैर, भैया, अब नहीं तो कुछ देर बाद खुशामद करेंगे। भला हम दोनों को भूखा देखकर मां और पिताजी को नींद कैसे आ सकती है ?

संजय : **(धीमे से)** मान लो, पिताजी ने हड़ताल बन्द करने के लिए कहा ही नहीं, तब क्या होगा ? मुझसे तो भूखा रहा नहीं जाएगा।

राजू : भूखा तो, भैया, मुझसे भी नहीं रहा जाएगा। पिताजी के हाथों में डिब्बे देखकर तो मेरा और बुरा हाल हो गया है।

संजय : यही हाल मेरा भी है। मेरा ख्याल है, मिठाई के डिब्बे, 'बंगाल स्वीट हाउस' से लाए हैं पिताजी !

राजू : **(दुःखी स्वर में)** हाय री किस्मत ! मां को पकौड़े आज ही तलने थे, पिताजी को मिठाई भी आज ही लानी थी।

संजय : फिर क्यों न हड़ताल बन्द कर दी जाए ?

राजू **(धीमे से)** भैया शायद मीना आ रही है कहीं उसने सुन लिया तो अच्छी भद्द उडेगी

ोर के प्रवेश-द्वार से मीना का प्रवेश। उसके हाथों में रसगुल्लों ; तश्तरी है।

(तश्तरी में से रसगुल्ला उठाकर मुंह में डालते हुए) अहा ! कितना मीठा, कितना रसदार रसगुल्ला है ! क्यों, राजू भैया, रसगुल्ला नहीं खाओगे ?

(दूसरी ओर मुंह करके) देख, मीना अगर मुझे गुस्सा आ गया, तो तश्तरी को छीनकर फर्श पर पटक दूंगा।

(खिलखिलाकर) वाह ! एक तो रसगुल्ला खाने को दे रही हू और ऊपर से यह रोब !

हम सब जानते हैं, और कोई समय होता, तो बताते तुझे...

(दबी मुस्कान से) अरे, भैया, पिताजी ढेर सारी बंगाली मिठाई लाए हैं बाजार से। तुम दोनों तो खाओगे नहीं, बस, सारी मिठाई मेरे हिस्से में आ जाएगी।

(खीझकर) हां-हां, एक तू ही तो पेटू रह गई है, जो इत्ती ढेर सारी मिठाई अकेली हड़प लेगी। देखूंगा कैसे तू....

(रसगुल्ला निगलकर) और नहीं तो क्या....तुम दोनों ने तो भूख-हडताल की हुई है। मिठाई पड़े-पड़े खराब नहीं होगी क्या ?

(नेपथ्य से) मीना ! ओ मीना !

(ऊंचे स्वर में) आ रही हूं, पिताजी !

सगुल्लों की तश्तरी मेज पर रखकर अन्दर चली जाती है।

भई, अब मुझसे तो रहा नहीं जाता। अगर यह भूख-हड़ताल यो ही जारी रही, तो इस पेटू मीना के पेट से मिठाई का एक भी टुकड़ा न बचने पाएगा।

बात तो ठीक है तुम्हारी, भैया, भूख-हड़ताल से कोई नतीजा नहीं निकल पाएगा ! **(रसगुल्लों की तश्तरी की ओर नजर गड़ाकर)** मौका अच्छा है, क्यों न झटपट एक-एक रसगुल्ला उडा लिया जाए ?

(इधर-उधर देखते हुए) लेकिन मीना को पता चल जाएगा, सोच लो

तो क्या हुआ उसी का हिस्सा तो है नही

सजय : **(गहरी सांस लेकर)** फिर हमारी भूख-हड़ताल का क्या होगा ?

राजू : मारो गोली भूख-हड़ताल को, भैया ! **(व्यग्र होकर)** यहां पेट में चूहों ने ऊधम मचा रखा है। अब मुझसे तो रहा नहीं जाता !

राजू तश्तरी में से एक रसगुल्ला उठाकर मुंह में डाल लेता है। संजय भी कुछ झिझकते हुए एक रसगुल्ला उठा लेता है। तभी दायें द्वार से रामनाथ प्रवेश करते हैं। उनके पीछे कुसुम और मीना भी है।

रामनाथ : **(ठहाका मारकर)** क्यों, यह भूख-हड़ताल हो रही है !

राजू : **(खिसियाने स्वर में)** पिताजी, वह तो हम मजाक कर रहे थे....भला हमें क्या पड़ी है, जो भूख-हड़ताल करें ?

सजय : और क्या, पिताजी, हम तो वैसे ही....

कुसुम : **(मुस्कराकर)** लेकिन तुम दोनों की मांग का क्या बना ? उसे पूरी नहीं कराओगे ?

संजय और राजू चुप रहते हैं।

रामनाथ : बहुत देर भूखे रह लिये बेचारे ! अब इनकी मांग भी पूरी हो जानी चाहिए। **(संजय और राजू से)** क्यों, अब तो खुश हो ?

सजय-राजू : **(एक साथ)** सच, पिताजी ? हमें रुपये मिल जाएंगे ?

रामनाथ : हां, भई, सोलहों आने सच !

राजू : **(प्रसन्न स्वर में)** आपने पहले क्यों नहीं मान लिया, पिताजी ?

रामनाथ : **(हंसकर)** तब भला तुम दोनों की भूख-हड़ताल देखने को कैसे मिलती ? क्यों ?

संजय और राजू एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कराते हैं। धीमे-धीमे पर्दा गिरता है।

❁

तोताराम

❖

श्रीकृष्ण

❖

नवप्रभात द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

रमेश के घर का एक कमरा। बीच में एक मेज पड़ी है, जिस पर एक किताब खुली रखी है। बराबर में एक कुर्सी पर रमेश बैठा है।

रमेश : **(रटते हुए)** अकबर का जन्म अमकोट में हुआ था....अकबर का जन्म अमकोट में हुआ था। हेमू बनिये की आंख में तीर लगा ....हेमू बनिये की आंख में तीर लगा....अकबर का जन्म....

मीना भागी हुई अंदर जाती है।

मीना : भैया, तुझे बाबूजी बुला रहे हैं।

रमेश : मैं नहीं आता। जा, कह देना, मैं पढ़ रहा हूं। अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था....अकबर का जन्म अमकोट में हुआ था....अकबर का जन्म....अकबर का जन्म....

मीना : चल, भैया, बाबूजी बड़े-बड़े माल लाए हैं....टॉफी, बिस्कुट, आह जी ! आह जी !

रमेश : अकबर का जन्म....अकबर का जन्म....देख मुझे भुला दिया न !

एक चांटा लगता है। मीना के रोने से कमरे का कोना-कोना गूंज उठता है।

मां : **(बाहर से)** अरे रमेश, क्या बात है ? मीना क्यों रो रही है ?

रमेश : मैंने मारा, मुझे पढ़ने नहीं देती। इतनी मुश्किल से तो याद किया था, आकर सब भुला दिया।

मां : तो इस समय तू पढ़ क्यों रहा है ? यह भी कोई पढ़ने का समय है। क्या मरी चौबीसों घंटों की पढ़ाई हो गयी ? जब देखो तब पढ़ना-ही-पढ़ना। दिमाग है या मशीन ?

रमेश : तुम तो, मां....हर समय यों ही कहती रहती हो। जब पढ़ूंगा नहीं तो फर्स्ट कैसे आऊंगा ? मुझे इस बार फर्स्ट आना है।

मां : अरे, फर्स्ट आना था, तो शुरू से पढ़ा होता। तब तो हर वक्त खेल-ही-खेल। अब जब इम्तहान सिर पर आ गए, तो रटने बैठा है ! ऐसे रटने से क्या तू समझता है कि फर्स्ट आ जाएगा ? अरे, पढ़ना तो थोड़े ही समय का बहुत होता है, अगर नियम से पढा जाए

बाहर से किसी के पुकारने की आवाज आती है

आवाज : रमेश ! और रमेश !

मा : जा देख, कौन पुकार रहा है ? अब रात में पढ़ना। पढ़ने के समय पढ़ना और खेलने के समय खेलना अच्छा होता है।

रमेश : नहीं, मां, मुझे पढ़ने दो। अब भी पढूंगा, रात को भी पढूंगा।

प्रकाश और राजेन्द्र आते हैं।

प्रकाश : रमेश, अरे भई, इतना पढ़ना अच्छा नहीं होता। हमें भी तो देखो....

राजेन्द्र : हां, भाई, पास तो हमें भी होना है। **(हाथ पकड़कर खींचता है।)** चलो, बहुत पढ़ लिये, अब खेलेंगे।

रमेश : देखो, राज, जिद न करो, नहीं तो लड़ाई हो जायेगी। तुम्हे खेलना है तो खेलो, मैं तो पढूंगा। अकबर का जन्म....

प्रकाश : हम तो तुम्हारे भले के लिए ही कहते हैं, आगे तुम्हारी मरजी। तुम तो पढ़ो, हम तो चलकर खेलते हैं। चलो, राज ! **(जाते-जाते धीरे से)** यह तो तोताराम है, तोते की तरह रटता है।

रमेश : अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था....अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था....हेमू बनिये की आंख में तीर लगा....हेमू की आंख में तीर लगा....हां, जी तीर लगा....अकबर का जन्म हेमू बनिये की आंख में हुआ था....नहीं-नहीं, अमरकोट मे हुआ था, अकबर का जन्म....**(रटता रहता है।)**

अंतराल

स्कूल का दृश्य : परीक्षा चल रही है। पर्दा उठने पर प्रकाश और राजेन्द्र दिखाई पड़ते हैं। उनके हाथ में एक-एक पर्चा है और स्याही सोखता है। हाथ स्याही में नीले हो रहे हैं।

प्रकाश : हमारा तो पत्ता गोल हो गया।

राजेन्द्र : क्यों, पर्चा तो इतना सख्त नहीं था। सत्रह नंबर तो आ जाएंगे ?

प्रकाश : खैर, पास होने में तो कोई टोटा नहीं है....लो, तोताराम भी आ गए **(रमेश आता है)** आओ हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे कहो पर्चा कैसा गया

रमेश : मजा आ गया। सारे सवाल वही आ गए जिनका रात घोटा लगाया था।

राजेन्द्र : अच्छा ! कितने नंबर आ जाएंगे ?

रमेश : पचास में से चालीस तो कहीं गए नहीं। तुम्हें कितने नंबरो की उम्मीद है ?

राजेन्द्र : यहां तो अधिक-से-अधिक पचास आएंगे। क्यों, तुम्हें कितने नंबरों की उम्मीद है ? तुमने दूसरा प्रश्न तो किया होगा ?

रमेश : क्या सवाल है ?

राजेन्द्र : **(पर्चे में से पढ़कर)** तुम अकबर के बारे में क्या जानते हो ?

रमेश : **(एकदम रटे हुए पाठ की तरह)** सुनो, अकबर का जन्म सन् 1556 में पोरबंदर (गुजरात) में हुआ था। वह जहांगीर का बेटा था। उसने ताजमहल बनवाया था। महा-संगीतज्ञ कालिदास इसके दरबार के नवरत्नों में से एक थे।

राजेन्द्र : **(हंसी दबाते हुए, मुंह बनाकर)** तब तो यह सवाल भी गलत हो गया।

रमेश : क्यों, तुमने क्या लिखा है ?

राजेन्द्र : बाद में बताऊंगा। पहले तुम पांचवें प्रश्न का उत्तर बताओ।

रमेश : सवाल पढ़ो।

राजेन्द्र : माउंट एवरेस्ट कहां है ? उसकी चोटी पर सबसे पहले कौन पहुंचा ?

रमेश : मैं तो इंग्लैंड में लिखकर आया हूं। यूरी गगारिन सबसे पहले उसकी चोटी पर पहुंचा था। **(उत्साह से भरकर)** और बोलो, कौन-से सवाल का जवाब पूछते हो ?

राजेन्द्र और प्रकाश के होंठों पर हंसी फूट पड़ना चाहती है पर वे जबरदस्ती हंसी रोककर गंभीर बने रहने का अभिनय करते हैं।

राजेन्द्र : **(पर्चे में से पढ़ते हुए)** निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर नोट लिखो : कलकत्ता, कुतुबमीनार, शिवाजी, कोलम्बस और मिसीसिपी।

रमेश : मैं तो कुतुबमीनार, कलकत्ता और शिवाजी पर लिखकर आया हूं

पहले कुतुबमीनार के बारे में बताओ।

(रटे हुए तोते की तरह) कुतुबमीनार संसार के आठ आश्चर्यों में से एक है। इसे अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाया था। यह गंगा नदी के किनारे पर स्थित है और सफेद संगमरमर की बनी है। कलकत्ता के बारे में भी बताऊं ?

हां, बताओ।

कलकत्ता भारत की राजधानी है। यह दुनिया का सबसे बड़ा नगर है। यहां तीन प्रकार की रेलें चलती हैं—एक धरती के नीचे, दूसरी धरती पर और तीसरी आसमान में। यहां दुनिया की सबसे अधिक वर्षा होती है।

और शिवाजी पर क्या लिखकर आए हो ?

शिवाजी को हिंदू कुल-भूषण कहा जाता है। वह जीवन भर अपनी मातृभूमि मेवाड़ की स्वाधीनता के लिए शत्रु से जूझते रहे। चेतक इनके प्यारे घोड़े का नाम था। पानीपत के मैदान मे बादशाह बाबर से इनकी भयंकर लड़ाई हुई थी। भामाशाह इन्हीं के समय में हुए थे। शिवाजी ने धन देकर उनकी बहुत सहायता की थी। अब तुम भी बताओ, तुम क्या लिखकर आए हो ?

(बनते हुए) रहने दो, तुम सुनकर हंसी उड़ाओगे।

नहीं, हंसी नहीं उड़ाऊंगा, चाहे कसम ले लो। अब तो बताओ।

ीन-चार लड़के और आते हैं। इनके हाथ में भी एक-एक पेपर याही की दवातें हैं।

लो, संजीव भी आ गया।

(दूर से ही जोर से) अरे भाई, तोताराम का क्यों 'घेराव' किया हुआ है ?

यार, हम तो उनसे अपने उत्तर मिला रहे हैं। आओ, तुम भी मिला लो।

ांख दबाकर इशारा करता है।

क्यों तोताराम जी, तुमने आखिरी सवाल का जवाब लिखा है ?

अकड़ते हुए सवाल बोलो क्या है

संजय : **(पर्चे में से पढ़कर)** सन् 1857 में कौन-सी प्रसिद्ध लड़ाई हुई थी, और किस-किसमें ?

रमेश : **(एकदम से)** सन् 1857 में प्लासी की प्रसिद्ध लड़ाई नवाब सिराजुद्दौला और झांसी की रानी अहिल्याबाई में हुई थी। इस लड़ाई में....

उसका उत्तर अभी पूरा भी नहीं होता है कि संजय बीच में ही खिलखिला पड़ता है। राजेन्द्र और प्रकाश की बड़ी देर से दबाई हुई हंसी भी फूट पड़ती है। दूसरे लड़के भी अपनी हंसी नहीं रोक पाते हैं।

रमेश : **(नाराज होकर)** जाओ, मैं नहीं बताता। तुम तो मजाक उडाते हो।

संजय : अरे तोताराम जी, मजाक तो तुम कर रहे हो बेचारे इतिहास के साथ।

रमेश : **(न समझते हुए)** क्या मतलब ?

संजय : मतलब यह कि सन् 1857 में प्लासी की लड़ाई नहीं, प्रथम स्वतंत्रता युद्ध हुआ था। प्लासी की लड़ाई तो 1757 में हुई थी। सौ वर्ष, जनाब, कहां खा गये ?

प्रकाश : और आजादी की लड़ाई झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रजों में हुई थी, न कि सिराजुद्दौला और अहिल्याबाई में। अहिल्याबाई झांसी की रानी भी नहीं थी, वह तो इंदौर के होलकर वंश की रानी थी।

एक लड़का : ठीक है मैंने भी यही लिखा है।

दूसरा लड़का : मैंने भी लिखा है।

तीसरा लड़का : मैंने भी।

रमेश : **(घबरा जाता है)** हाय, मैं तो उल्टा लिख आया। अब क्या होगा ?

प्रकाश : रटने का तो यही नतीजा होता है।

रमेश : पर, कोई बात नहीं, फर्स्ट डिवीजन मार्क्स फिर भी आ जाएंगे। चालीस न सही, तीस सही।

राजेन्द्र : हां तीस न सही तो बीस सही। बीस न सही तो गोल-गोल अडा तो कहीं गया ही नहीं

(चिढ़कर) अंडा आएगा तुम्हारा।
यह तो तब पता लगेगा, जब रिजल्ट आएगा कि किसका अडा आता है, हमारा या तुम्हारा ? बच्चू, तुमने तो वही बात कर दी—'कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।'
शिवाजी की मातृभूमि मेवाड़ नहीं, महाराष्ट्र है। मेवाड़ तो महाराणा प्रताप की मातृभूमि है। चेतक उनका घोड़ा था।
और बाबर से तो पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी की लडाई हुई थी, शिवाजी की लड़ाई तो बाबर के परपोते के भी पोते औरंगजेब से हुई थी। भामाशाह भी महाराणा प्रताप के समय में हुए थे, शिवाजी के नहीं। और भामाशाह ने प्रताप की धन से सहायता की थी, न कि शिवाजी ने भामाशाह की।
कुतुबमीनार अलाउद्दीन खिलजी ने नहीं, कुतुबुद्दीन ने बनवाई थी। वह किसी नदी के किनारे भी स्थित नहीं है।
और वह लाल पत्थर की बनी हुई है। सफेद संगमरमर का तो आगरा का ताजमहल है।
कलकत्ता भारत की राजधानी नहीं, बल्कि पश्चिमी बंगाल की राजधानी है। हमारे देश की राजधानी तो दिल्ली है। कलकत्ता में तीन प्रकार की रेलें भी नहीं चलतीं, न ही वह संसार का सबसे बड़ा शहर है। संसार का सबसे बड़ा नगर तो न्यूयार्क है जो अमरीका में है। वहीं तीन प्रकार की रेलें चलती हैं।
और संसार में सबसे ज्यादा वर्षा भी चेरापूंजी में होती है, कलकत्ता में नहीं।
; चेहरे पर प्रति पल निराशा बढ़ती जा रही है। घबराहट के मारे ने-पसीने हो रहा है। राजेन्द्र और प्रकाश बिना रुके बोले जा

माउंट एवरेस्ट इंग्लैंड में नहीं, हिंदुस्तान में है, हिमालय की सबसे ऊंची चोटी।
और इस पर सबसे पहले शेरपा तेनसिंह पहुंचे थे। यूरी गगारिन तो प्रथम अंतरिक्ष विजेता थे।
(उदास स्वर में) हाय अब मैं क्या करू ? मैं तो फेल हो गया

राजेन्द्र : अभी से घबरा गए ! अभी तो और सुनो। अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था, पोरबंदर में नहीं। वहां तो बापू का जन्म हुआ था। अकबर का जन्म सन् 1542 में हुआ था, 1556 में नहीं। 1556 में तो उसकी पानीपत के मैदान में अफगानों से लड़ाई हुई थी, जो 'पानीपत की दूसरी लड़ाई' के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रकाश : और अकबर का बाप जहांगीर नहीं, हुमायूं था। जहांगीर तो बेटा था।

रमेश : हाय, मेरा तो दिल घबरा रहा है। मुझे तो चक्कर आ रहे हैं।

दोनों हाथों में सिर थामकर रमेश नीचे बैठ जाता है। सब लड़के एक जोर का ठहाका लगाते हैं।

छात्र की परीक्षा

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी समिति द्वारा
सर्वश्रेष्ठ अनुवाद-एकांकी
प्रतियोगिता में पुरस्कृत

छात्र का नाम लल्लू है। मास्टर भोलानाथ पढ़ा रहे हैं।

विद्यार्थी के पिता का प्रवेश

पिता : मास्टर साहब, अब लल्लू के पढ़ने-लिखने का क्या हाल है ?

मास्टर : जी, लल्लू बदमाश तो जरूर है, लेकिन पढ़ने-लिखने में खूब है। कभी एक दफे के सिवा दो दफे बतलाना नहीं पड़ता। जो मैं एक बार पढ़ा देता हूं उसे नहीं भूलता।

पिता : हां। अच्छा तो मैं उसकी परीक्षा लेकर देखता हूं।

मास्टर : देखिए न।

लल्लू : **(मन में)** कल मास्टर साहब ने ऐसा मारा था कि आज भी पीठ कल्ला रही है। आज उसका बदला लूंगा। आज ही बच्चा को निकलवाता हूं।

पिता : क्यों रे लल्लू, पिछला पढ़ा सब याद है ?

लल्लू : मास्टर साहब ने जो पढ़ा दिया है, सब याद है।

पिता : अच्छा बता, उद्भिद् किसे कहते हैं ?

लल्लू : जो धरती फोड़कर निकले।

पिता : कोई उदाहरण बता।

लल्लू : जैसे केंचुआ।

मास्टर : **(आंखें चढ़ाकर)** अंय ! क्या कहा ?

पिता : ठहरिए मास्टर साहब, अभी कुछ न कहिए। **(लल्लू से)** व्याकरण याद है ?

लल्लू : हां।

पिता : अच्छा कर्ता किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ।

लल्लू : जी, कर्ता हैं जग्गू महाब्राह्मण, जो 'क्रिया-कर्म' में ही लगे रहते हैं।

मास्टर : **(क्रोध से दांत पीसकर)** तेरा सिर। **(पीठ पर बेंत की मार)**

लल्लू : **(चौंककर)** जी, यह तो सिर नहीं पीठ है।

पिता : षष्टी-तत्पुरुष किसे कहते हैं ?

लल्लू : मुझे नहीं मालूम।

मास्टर का बेंत दिखलाना

लल्लू उसे खूब जानता हू षष्ठी-तत्पुरुष है

ा हंसना और मास्टर का बिगड़ना

इतिहास पढ़ा है ?

हा।

अच्छा, दारा को किसने काट डाला ? इतिहास क्या कहता है ?

कीड़े ने। **(मास्टर का बेंत मारना)** मास्टर साहब, आप तो आज बेकार मार रहे हैं—केवल दारा क्यों, सारे इतिहास को कीड़ों ने काट डाला है। यह देखिए। **(पुस्तक दिखलाना)**

(मास्टर का सिर खुजलाना)

हिसाब सीखा है ?

हा।

अच्छा तुमको साढ़े छः पेड़े देकर कह दिया गया कि पाच मिनट तक पेड़े खाने पर जितने पेड़े बचें सो सब अपने छोटे भाई को दे दो। एक पेड़ा खाने में तुमको दो मिनट लगते है, तो तुम अपने भाई को कितने पेड़े दोगे ?

एक भी नहीं।

कैसे !

सब खा डालूंगा। दे न सकूंगा।

अच्छा, एक बरगद का पेड़ रोज चौथाई इंच के हिसाब से ऊचा होता है। वह पेड़ वैशाख बदी परेवा को दस इंच था तो दूसरे साल की उसी तिथि को कितना ऊंचा होगा ?

अगर वह पेड़ टेढ़ा हो जाय तो कुछ कहा नहीं जा सकता, अगर वह सीधा बढ़ता चला जाय तो नापने से मालूम हो जायेगा और अगर इसी बीच में वह पेड़ सूख गया तब तो कुछ कहना ही नहीं है।

मार खाये बिना तेरी बुद्धि नहीं खुलती ! बदमाश, मारकर तेरी पीठ लाल कर दूंगा तब तू सीधा होगा।

जी, मार से तो खूब सीधी चीज भी टेढ़ी हो जाती है। मास्टर साहब, यह आपका भ्रम है। मार-पीट से बहुत कम काम होता है' कहावत है कि गधा पीटकर घोडा नहीं किया जा सकता किन्तु प्राय घोडा पीटने से गधा हो जाता है

अधिकांश लड़के सीख सकते हैं, पर अधिकांश मास्टर सिखा नहीं सकते। किन्तु मार लड़के ही खाते हैं। आप अपना बेंत लेकर जाइए, कुछ दिन लल्लू की पीठ ठण्डी हो। इसके बाद मैं खुद इसे पढ़ाऊंगा।

लल्लू : **(मन में)** जान बची।

मास्टर : मेरी भी जान बची महाशय ! इस लड़के को पढ़ाना मजूर का काम है। इस लड़के को पढ़ाने से महीने भर में केवल पांच रुपये मिलते हैं। अगर डलिया ढोऊंगा तो भी महीने में दस रुपये मिलेंगे।

अंधेर नगरी चौपट्ट राजा

भारतेंदु हरिश्चंद्र

❖

राष्ट्रभाषा हिन्दी समिति द्वारा
सर्वश्रेष्ठ अनुवाद-एकांकी
प्रतियोगिता में पुरस्कृत

❖

राम भजो राम भजो राम भजो भाई।
राम भजो राम भजो राम भजो भाई।।

भजन गा-गाकर भीख मांगता हुआ एक साधु अपने दो चेलों के साथ एक नगरी से बाहरी इलाके में आ पहुंचा।

पहला दृश्य

स्थान—शहर से बाहर सड़क। महंतजी और दो चेले बातें कर रहे हैं।

महंत : बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान् को भोग लगे। और क्या !

नारायणदास : गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनन्द हो !

महंत : बच्चा गोबर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

गोबर्धनदास जाता है।

गोबर्धनदास : **(कुंजड़िन से)** क्यों, भाजी क्या भाव ?

कुंजड़िन : बाबाजी, टके सेर !

गोबर्धनदास : सब भाजी टेक सेर ! वाह, वाह ! बड़ा आनंद है। यहां सभी चीजें टके सेर !

(हलवाई के पास जाकर) क्या भाई, मिठाई क्या भाव ?

हलवाई : टके सेर।

गोबर्धनदास : वाह, वाह ! बड़ा आनन्द है। सब टके सेर क्यों, बच्चा ? इस नगरी का नाम क्या है ?

हलवाई : अंधेर नगरी।

गोबर्धनदास : और राजा का नाम क्या है ?

हलवाई : चौपट्ट राजा।

गोबर्धनदास : वाह, वाह !

अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा।
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।।

हलवाई तो बाबाजी कुछ लेना हो तो ले ले

गोबर्धनदास : बच्चा, भिक्षा मांगकर सात पैसा लाया हूं; साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोबर्धनदास आता है।

महंत : बच्चा गोबर्धनदास, क्या भिक्षा लाया ? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है !

गोबर्धनदास : गुरुजी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहां सब चीजें टके सेर मिलती हैं तो मैंने इसकी बात पर विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका राजा कौन है, जहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है ?

गोबर्धनदास : अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा !

महंत : तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नहीं रहूंगा !

गोबर्धनदास : गुरुजी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊंगा। और जगह दिन भर मांगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूंगा।

महंत : देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूं, पर इतना कहे जाता हूं कि कभी संकट पड़े तो याद करना। **(यह कहते हुए महंत चले जाते हैं।)**

दूसरा दृश्य

राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। परदे के पीछे से 'दुहाई है' का शब्द होता है।

राजा : कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो !

दो नौकर एक फरियादी को लाते हैं।

फरियादी : दुहाई, महाराज, दुहाई !

राजा : बोलो क्या हुआ ?

फरियादी : कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी सो मेरी बकरी

उसके नीचे दब गई। न्याय हो !

राजा : कल्लू बनिए को पकड़कर लाओ !

नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं।

राजा : क्यों रे बनिए, इसकी बकरी दबकर मर गई ?

कल्लू बनिया : महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार र कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

कल्लू जाता है। नौकर कारीगर को पकड़ लाते हैं।

राजा : क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

कारीगर : महाराज, चूनेवाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार पड़ी।

राजा : अच्छा, उस चूनेवाले को बुलाओ।

कारीगर निकाला जाता है। चूनेवाला पकड़कर लाया जाता है।

राजा : क्यों रे चूनेवाले, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

चूनेवाला : महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इस चूना कमजोर हो गया।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो।

भिश्ती लाया जाता है।

राजा : क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार पड़ी और बकरी दबकर मर गई ?

भिश्ती : महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इ बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।

राजा : अच्छा, भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ !

नौकर भिश्ती को निकालते हैं और कसाई को लाते हैं।

राजा : क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मशक क्यों बनाई ?

कसाई : महाराज, गड़रिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची मशक बड़ी बन गई।

राजा : अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिए को लाओ !

कसाई निकाला जाता है, गडरिया लाया जाता है

राजा क्यों रे गडरिया ऐसी बडी भेड क्यो बेची

गड़रिया : महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, भीड़भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया। मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ !

कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है।

राजा : क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूमधाम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी ?

कोतवाल : महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा : कुछ नहीं ! ले जाओ, कोतवाल को अभी फांसी दे दो !

सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं।

तीसरा दृश्य

गोबर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है।

गोबर्धनदास : गुरुजी ने हमको नाहक यहां रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या ! खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं।

सिपाही : चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मजा मिलेगा !

गोबर्धनदास : **(घबराकर)** अरे, यह आफत कहां से आई ? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे पकड़ते हो ?

सिपाही : बात यह है कि कल कोतवाल को फांसी का हुक्म हुआ था। जव उसे फांसी देने को ले गए तो फांसी का फंदा बड़ा निकला, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले-पतले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फांसी दे दो; क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी-न-किसी को सजा होनी जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

दुहाई परमेश्वर की अरे मै नाहक मारा जाता हूं अरे यहां बडा ही अधेर है गुरुजी आप कहा हो आओ मेरे प्राण

बचाओ

गोबर्धनदास चिल्लाता है सिपाही उसे पकड़कर ले जाते है

गोबर्धनदास : हाय बाप रे ! मुझे बेकसूर ही फांसी देते हैं।

सिपाही : अरे चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है !

गोबर्धनदास : हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी, कहां हो ? बचाओ, गुरुजी ! गुरुजी !

महत : अरे बच्चा गोबर्धनदास, तेरी यह क्या दशा है ?

गोबर्धनक्षस : **(हाथ जोड़कर)** गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फांसी दी जा रही है। गुरुजी ! बचाओ !

महत : कोई चिंता नहीं। **(भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से)** सुनो, मुझे अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो।

सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं। गुरुजी चेले को कान में कुछ समझाते हैं।

गोबर्धनदास : तब तो गुरुजी, हम अभी फांसी चढ़ेंगे।

महत : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हैं, हमको चढ़ने दे।

इस प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं।

राजा : यह क्या गोलमाल है ?

सिपाही : महाराज, चेला कहता है, मैं फांसी चढ़ूंगा और गुरु कहता है, मैं चढ़ूंगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है !

राजा : **(गुरु से)** बाबाजी, बोलो, आप फांसी क्यों चढ़ना चाहते है ?

महत : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मत्री : तब तो हम फांसी चढ़ेंगे।

गोबर्धनदास : नहीं, हम ! हमको हुक्म है !

कोतवाल : हम लटकेंगे ! हमारे सबब से तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग ! राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है ! हमको फासी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो !

राजा को नौकर लोग फांसी पर लटका देते हैं। परदा गिरता है।

❁

गाड़ी रुकी नहीं

❖

मनोहर वर्मा

❖

'पराग' द्वारा आयोजित
बाल-एकांकी प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

❖

स्थान : होस्टल में लड़कों का एक कमरा। सब लड़के यात्रा पर के लिए अपना-अपना सामान बांधने में व्यस्त हैं।

समय : दिन का तीसरा पहर।

पर्दा उठते ही स्टेज पर गिरीश, रमेश और सुदेश अपने-अपने का व्यस्त दिखाई देते हैं। गिरीश होलडॉल जमा रहा है।

गिरीश : **(उतावली में, कुछ खोजते हुए)** रमेश, मेरी चादर कहा

रमेश : मुझे क्या पता ? **(ट्रंक जमाता है। काफी कपड़े ट्रंक के ही रखे हैं।)**

फिर किसे पता है ? जिससे पूछो वह यही जवाब देता है
(खीझते हुए) किसी को पता नहीं, तो गई कहां ? (कहते-कह
खड़ा हो जाता है। कमर पर हाथ रखकर एक क्षण ठहरता है
फिर इधर-उधर बिखरे पड़े कपड़े और होलडॉल में खोजत
है।)
(कपड़ों पर प्रेस करते-करते) कैसी थी चादर ?
(खड़ा होकर सुदेश की ओर देखता हुए—हाथ कमर पर) नील
चौकड़ी वाली।

सुदेश : अरे हां, कहीं देखी तो थी। **(सोचने की मुद्रा—फिर चुटकी बजाते हुए)** हां, याद आया....**(कुछ ठहरकर)** धोबी घाट पर देखी थी **(हंसी)** !

इधर रमेश दौड़कर खूंटी पर लटक रहे हैंगर से हरी ऊनी पैंट उतारकर अपने ट्रंक में रखने लगता है।

गिरीश : अरे ! अरे ! यह क्या हो रहा है ? पैंट मेरी है, जनाब।

रमेश : तुम्हारी है ? **(मुस्कराते हुए)** तो फिर मेरी कहां गई ? **(इधर-उधर नजर दौड़ाता है।)**

सुदेश : पहने तो हो।

रमेश : ऐं ! **(अपनी पहनी हुई पैंट देखता है, जो सफेद है—फिर हंसकर)** यह नहीं, यार, ऐसी ही हरी पैंट थी। **(इधर-उधर खोजता है। तभी पार्श्व में रकाबियां और बर्तन गिरने की आवाज के साथ एक हल्की-सी चीख।)**

सुदेश : अरे राकेश, भैंस ने काट खाया क्या ?

सुदेश दौड़कर भीतर जाता है—साथ ही रमेश भी। दूसरे ही क्षण राकेश के साथ दोनों लौटते हैं। राकेश के कपड़ों पर कुछ साग-भाजी और चटनी आदि के दाग लगे होते हैं। रमेश राकेश की बांह पकड़े लाता है और सुदेश कुछ बर्तन जिनमें खाने-पीने का सामान है।

गिरीश : **(आश्चर्य से)** अरे ! यह क्या हुआ, राकेश ?

राकेश पांव पकड़कर बैठ जाता है।

रमेश : हुआ क्या, बड़े तीसमार खां बनते हैं ! खाने-पीने का सारा सामान एक साथ उठाकर ला रहे थे, पांवों के बीच से चूहा निकलकर भागा....

सुदेश : ....तो हजरत चूहे से ऐसे डरे, ऐसे चौंके कि धड़ाम् ! ये नीचे बर्तन ऊपर और चूहा बिल में **(हंसी)** !

गिरीश : फिर....**(चिंतित-सा)** खाने का क्या हुआ ?

सुदेश : खाने का ? यह हुआ....**(बर्तन में से दो-एक परांठे निकालकर दिखाते हुए)** यह पूड़ी साग में चुपड़ी। यह आलू का साग **(दूसरे बर्तन उठाते हुए)** कांच के चूरे से भरपूर !

गिरीश **पेट के दोनो हाथ** तो फिर आज पेट की छुट्टी

सुदेश : और भूख को फांसी **(राकेश की कमीज पर लगी चटनी चाट लेता है)** !

राकेश : **(तेजी से)**....अरे, यह टेबिल पर धुआं !

सुदेश : ओह, माई गॉड ! मर गये ! **(बर्तन पटककर भागता है।)**

राकेश के कहने के साथ ही रमेश भी जो अपना ट्रंक जमा रहा होता है भागता है और उस टेबिल के पास ही रखे होलडॉल से गिरते-गिरते बचता है। पर उसका हाथ प्रेस के तार पर पड़ जाता है। इधर प्रेस धरती पर और उधर प्लग से वायर टूट जाता है। पटाक की आवाज के साथ फ्यूज उड़ जाता है। टेबिल-पंखा और टेबिल-लैम्प बन्द हो जाते हैं।

सुदेश : **(अपनी नमी देकर रखी हुई बुशर्ट उठाते हुए)** लो, हो गई प्रेस !

राकेश : **(हल्के लंगड़ाते हुए)** अपना तो बेड़ा गर्क हो गया ! पांच-छ. कपड़े तर पड़े हैं। **(चलकर टेबिल तक जाता है।)** क्या करे अब ? पता नहीं, इस रमेश को बैठे-बिठाये क्या हो जाता है !

रमेश : **(हंसते हुए)** भई, मैंने कोई जान-बूझकर तो किया नहीं।

राकेश : दूसरों का काम बिगाड़कर अब हंसते हो, बेशर्म हो पक्के !

मुकेश दौड़ता हुआ आता है।

मुकेश : ऐ रमेश, धोबी से कपड़े लाया मेरे ?

रमेश : **(मुंह बनाकर)** ओह ! वेरी सॉरी।

मुकेश : वेरी सॉरी ! **(मुंह बिगाड़कर)** एक छोटा-सा काम बताया, वह भी नहीं हुआ। हम ही बेवकूफ हैं, जो तुम्हारा काम कर देते हैं।

गिरीश : क्या काम किया तूने ?

सुदेश : जूतों पर पालिश....

राकेश : **(आगे जोड़ता है)** सिर में मालिश **(ठहाका)**।

मुकेश : **(मुस्कराते हुए)** ला, ला, रसीद दे जल्दी।

रमेश : **(पतलून की जेबें टटोलते हुए)** रसीद तो मैंने बाजार से लौटते ही तुम्हें दे दी थी, भई।

मुकेश : **(अपनी जेबें टटोलता है)** मुझे ? **(जेब से ट्रंक की चाबी निकलती है** नहीं नहीं रमेश मुझे नहीं दी तुमने

रमेश : म्यां, देखो तो सही, कहीं ट्रंक में रख दी होगी।

मुकेश एक बन्द रखी अटैची को उठाकर पलंग पर रखकर खोलता है और सब कपड़े निकाल-निकालकर देखता है। बाहर कपड़ों का ढेर लग जाता है। रसीद नहीं मिलती।

मुकेश : **(चिन्तित-सा)** मर गए, उस्ताद ! रसीद नहीं मिली ! **(रुककर)** रमेश, तुम अपने पास और देख लो एक बार। **(खोया-खोया-सा स्वयं इधर-उधर कपड़ों में और बार-बार अपनी जेबों में ढूंढ़ता रहता है। दुबारा टटोलता है। बुशर्ट की ऊपर वाली जेब से एक-दो कागज के साथ एक पर्ची निकालता है।)**

रमेश : मुकेश, देखो, यह तो नहीं **(पर्ची देता है)** !

मुकेश : यही तो है, दुष्ट ! मेरे सारे जमे-जमाए कपड़े निकलवा दिये। **(रमेश हंसता है)** बड़ा तीर मारा, जो अब हंस रहे हो ! **(वापस अपने कपड़े जमाने लगता है।)**

चपरासी झुम्मन का दौड़े-दौड़े आना। मुंह में तम्बाकू दबाए-दबाए कुछ मुंह ऊंचा करके बोलता है और बार-बार धोती को ऊंचे चढ़ाता-छोड़ता है।

झुम्मन : गिरीश भैया, आपको मास्टरजी बुलाय रहेन, जल्दी !

गिरीश : **(झुंझलाते हुए)** उफ, मास्टरजी अपना-ही-अपना काम करवाते रहेंगे ! मैं अपना सामान न जमाऊं ? अब तीनों घड़ियों के अलार्म बजने ही वाले हैं।

मुकेश : अरे रे, बिगड़ते क्यों हो ? कोई खास काम होगा। घड़ियों के अलार्म तो गाडी के टाइम से पन्द्रह मिनट पहले के है। **(झुम्मन से)** झुम्मन, तुम गिरीश का होलडॉल बांध दो तब तक।

झुम्मन : हां-हां, बांध देइत, लल्ला....लाओ ! **(घुटने से ऊंची धोती को और ऊंचे चढ़ाते हुए, फुदकती चाल से चलते हुए होलडॉल के पास पहुंचता है।)**

गिरीश : **(जाते-जाते)** देख, जरा ठीक से बांधना। मैं अभी आया। **(चला जाता है।)**

झुम्मन होलडॉल को गोल करके पट्टे खींचता है एक-दो बार हू हू

....करके खींचता है, फिर होलडॉल पर पांव लगाकर पट्टा और जोर से खींचता है। पट्टा टूट जाता है। 'एइ लो, बाबू'....कहता हुआ झटके के साथ ही पीछे को लुढ़क जाता है। सभी उपस्थित लड़के ठठाकर हंसते हैं। तभी गिरीश का दौड़ते हुए वापस आना।

गिरीश : **(हंसते हुए)** सुनो, दोस्तो, सुनो, सब लोग अपने-अपने बिस्तर वापस खोलो।

सुदेश : **(हंसते हुए)** तुम्हारा तो झुम्मन ने खोल भी दिया....! **(एक बार फिर हंसी।)**

गिरीश : मास्टरजी के होलडॉल को चूहे खा गए हैं, इसलिए उनके होलडॉल का सामान हमें अपने होलडॉल में भरना होगा!

तभी एक लड़का गद्दा, तकिया, कम्बल, चादर आदि लाकर आंगन में पटक देता है।

गिरीश : लो, भई, एक-एक चीज बांट लो! यह रहा मास्टरजी का सामान।

झुम्मन : **(गम्भीरता से)** यह पट्टा टूट गयेन, ललुवा....अब का करिहै?

गिरीश : **(माथा ठोंकते हुए)** अबे, इसे जल्दी से सिलवा, ललवा के कलवा!

हंसी के बीच पट्टा लिये झुम्मन धोती ऊंचे उठाये फुदकती चाल से चल देता है। तभी प्रदीप प्रवेश करता है।

प्रदीप : मुकेश, मास्टरजी अपनी चाबियों का गुच्छा मांग रहे हैं।

मुकेश : मैंने मास्टरजी को दे दिया....शायद! **(अपनी जेब बाहर से ही टटोलता है।)**

प्रदीप : उन्हें नहीं मिल रहा। वह तो खुद ढूंढ़ रहे हैं।

प्रदीप और मुकेश दोनों जाने लगते हैं।

मुकेश : रमेश, मेरी अटैची खुली पड़ी है?

रमेश : (अटैची को देखता है, ढक्कन खुला है) हां, बन्द कर दूं?

मुकेश : ऐं....हां....! **(चला जाता है।)**

रमेश अटैची बन्द करके पास ही रखा खटके से बन्द हो जाने वाला ताला लगा देता है। कुछ क्षण बाद ही मुकेश लौट आता है। चिंतित-सा अपनी अटैची के पास पहुचता है ताला बन्द पाता है

मुकेश रमेश चाबी दे तो

रमेश : चाबी ! कैसी चाबी ?

मुकेश : अटैची की।

रमेश : चाबी कहां थी ? खाली ताला ही था, मैंने दबाकर ही बन्द कर दिया था।

मुकेश : फिर चाबी कहां गई ? **(बड़ा चिंतित-सा पतलून और कमीज की जेब में खोजता है।)**

गिरीश : तुम्हारे पर्स में थी न एक चाबी ?

मुकेश : हां, वही तो थी। **(कुछ सोचकर)** पर्स मैंने तुम्हें ही तो दिया था।

गिरीश : मुझे तुमने अटैची में रखने को ही तो कहा था। तभी रख दिया था।

मुकेश : तब तो मर गए, उस्ताद !

मास्टरजी का प्रवेश।

मास्टरजी : **(हाथ की दोनों कुहनियों से पतलून को ऊंचे खिसकाते हुए)** अरे, मुकेश, चाबियां दो, भई !

मुकेश : सर, मुझे याद है, मैंने आपको लौटा दी थीं।

मास्टरजी : **(पतलून खिसकाकर चश्मा साफ करते हुए)** तुमने मुझे दी जरूर थीं, पर मैंने तुम्हें वापस दे दी थीं फिल्म निकालने को। याद आयी ?

मुकेश : **(डरते हुए)** यस, सर....!

मास्टरजी : फिल्में कहां हैं ?

मुकेश : सर, अटैची में।

मास्टरजी : बस, उन्हीं के साथ चाबियां होंगी जरूर....देखो....

मुकेश : **(डरते हुए)** सर, ताला लगा है।

मास्टरजी : **(चिढ़ते हुए)** ताला खोल नहीं सकते ? अजीब लड़के हो !

मुकेश : सर, चाबी अन्दर अटैची में ही....

मास्टरजी : **(गुस्से में)** चलो, उठाओ अटैची और हाथ-के-हाथ बाजार जाकर खुलवाओ अब। चाबियों के बिना क्या होगा मगर ? लगता है तुम लोगो को आज चलना नहीं है **बडबडाते हुए**

जाते हैं।)

मुकेश भी अटैची उठाकर चलता है।

सुदेश : **(चिढ़ाते हुए)** अच्छा, भई मुकेश, अच्छी तरह जाना। चिट्ठी-पत्री देते रहना।

मुकेश मुस्कराता है। और लड़के भी हंसते हुए 'टा-टा, बाई-बाई' करते हैं। मास्टरजी झुम्मन को आवाजें देते वापस आते हैं।

मास्टरजी : **(झुम्मन को न देखकर)** अरे, यह झुम्मन का बच्चा कहां गया ?

राकेश : सर, वह तो....**(डरते हुए)** होलडॉल की बेल्ट सिलवाने गया है।

मास्टरजी : ओह, तुम लोग सुबह से कर क्या रहे हो ? **(परेशान-सा)** तुमने खाने के सामान की पैकिंग कर दिया, राकेश ?

राकेश : सर....मैं....**(खाने के सामान की ओर देखता है।)** अभी पैक किए देता हूं।

मास्टरजी : कब करोगे फिर ? गाड़ी चली जाएगी, उसके बाद ? **(कुछ रुककर)** और प्रदीप, तुम्हारे जिम्मे क्या काम था ?

प्रदीप : सर, लाण्ड्री से आपके....

मास्टरजी : **(बीच ही में)** हां, कपड़े लाने थे न ? कहां रखे ?

प्रदीप : सर, लाया ही कहां ?

मास्टरजी : क्यों ?

प्रदीप : सर, आज उसकी दुकान बन्द है।

टूटी बेल्ट लिये झुम्मन का प्रवेश।

झुम्मन : **(घबराया-सा)** ये पट्टवा तो ठीक नाहीं हो सकी....

मास्टरजी : क्यों ?

झुम्मन : आज सबै ही दुकान बन्द रही, बाबू।

गिरीश का अटैची लिये प्रवेश।

मास्टरजी : **(खीझते हुए)** तुम्हें भी दुकान बन्द मिली होगी ?

गिरीश : **(गम्भीरता से)** यस, सर ! **(लड़कों की हंसी)** आज शहर मे हड़ताल है, सर !

मास्टरजी : **(मुंह बिगाड़कर खीझते हुए)** सर....सर....सर, सबका सिर फिर गया है आज कैसे जाओगे तुम लोग ? **(घड़ी देखते हैं)** कुल दस पन्द्रह मिनट रह गए हैं मैने तीन चार लडकों को

कुछ सामान लेकर स्टेशन भेज भी दिया।

टेलीफोन की घंटी। झुम्मन दौड़कर कॉरीडर से टेलीफोन उठाकर मास्टरजी के पास ले आता है। तभी तीनों अलार्म घड़ियों के अलार्म बज उठते हैं। मास्टरजी झुंझलाकर उधर देखते हैं और चार-पांच लड़के डरते-सकपकाते अलार्म बन्द करने दौड़ते हैं।

मास्टरजी : हां, तो कैलाश, तुम स्टेशन से बोल रहे हो !....हां....हां....। गाड़ी जाने में कुछ ही मिनट रह गए हैं ?....मैं क्या करूं ? यहां ये लोग अभी तैयार ही नहीं हुए !....ऐं....क्या....? डिब्बे में बिस्तर भी बिछा लिये हैं ? अरे, इतनी जल्दी क्या थी, बेवकूफ ?....ऐं....गाड़ी सीटी दे रही है ? तो, कमबख्त, दौड़कर अपना सामान तो उतारो !....हां....हां....अरे !.... पागल हो ? अब इस गाड़ी से कैसे जा सकते हैं ?.... **(झुंझलाते हैं)** गधे....!

मास्टरजी के टेलीफोन रखने के साथ ही पर्दा गिर जाता है।